हमारा

अधिष्ठान

मा० दत्तोपन्त ठेंगडी

प्रकाशक :

भारतीय मजदूर संघ

राम नरेश भवन, तिलक गली

पहाड़गंज-नयी दिल्ली-110055

हमारा अधिष्ठान

दत्तोपन्त ठेंगड़ी

प्रकाशक :

भारतीय मजदूर संघ

राम नरेश भवन

तिलक गली पहाड़गंज-नयी दिल्ली 110055

दो शब्द

पूर्णकालिक कार्यकर्ता भारतीय मजदूर संघ के आधार स्तम्भ हैं । देशभर में लगभग दो सौ ऐसे कार्यकर्ता अपनी व्यक्तिक तरक्की, सुख सम्पदा, आराम-विराम को तिलान्जलि देकर समाज सेवा भाव से इस राष्ट्रवादी श्रमिक संघ का सबल संगठन रूपी वास्तु खड़ा करने के लिए अहोरात परिश्रम कर रहे हैं ।

ऐसे समर्पित व्यक्तियों को ध्येयवाद का खाद और संस्कारों का निर्मल जल समय-समय पर उपलब्ध कराना आवश्यक है ।

इस दृष्टि से पूर्णकालिक कार्यकर्ताओं के दो वर्ग तीन-तीन दिन के अलग-अलग लिए गये । पहला वर्ग वाराणसी के निकट सारनाथ के पवित्र वायुमण्डल में १९८८ के नवम्बर २७ से २९ तक सम्पन्न हुआ । इस वर्ग में भारतीय मजदूर संघ के संस्थापक मा० दत्तोपन्त ठेंगड़ी जी के तीन भाषण हुए जिस का संकलन श्री राजेश्वर दयाल शर्मा संगठन मंत्री भारतीय मजदूर संघ मेरठ क्षेत्र ने किया है । वैचारिक दृष्टि से मा ० ठेंगड़ी जी के ये विचार बड़े ही श्रेष्ठ कोटि के हैं ।

सभी कार्यकर्ताओं के लिये उपयुक्त होने के कारण उसे हम प्रकाशित कर रहे हैं ।

२३ -७-८ ९ प्रकाशक
स्थापना दिवस भा० मजदूर संघ

हमारा अधिष्ठान

मोहम्मद इकबाल ने हिन्दुस्तान के बारे में कहा है कि “कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी” । किन्तु उन्होंने पाकिस्तान के बारे में ऐसा नहीं कहा और अन्य देशों के लिए उन्होंने कहा है कि “युनान, मिश्र, रोमां सब मिट गये जहाँ से” । बड़े-बड़े साम्राज्य निर्माण हुए किन्तु सभी मिट्टी में मिल गये लेकिन “कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी” । गीता में भगवान कृष्ण ने कहा है कि “अधिष्ठानम् तथा कर्ता” यह अधिष्ठान वह हस्ती है जिसके लिये कहा गया है कि “कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी” । ऐसा अधिष्ठान होने के कारण हमारा राष्ट्र बराबर चलता आ रहा है जबकि दुनियां में कई राज्य और साम्राज्य आये तथा चले भी गये । अधिष्ठान को अंग्रेजी भाषा में Ideology कहा गया है । इसे Principle भी कहते हैं । अधिष्ठान का विस्तृत अर्थ है । एक श्रेष्ठ विचारक ने ऐसा कहा है कि (Principle Stands on its own legs) सिद्धान्त अपने पैरों पर खड़े रहते हैं यदि सिद्धान्त सत्य है तो अपनी सत्यता के कारण उसकी विजय होती है । किन्तु सत्य को मान्यता मिलने में बड़ा समय लगता है । कोपरनिकस को अस्सी साल बाद मान्यता मिली किन्तु वह भी निगेटिव (निषेधात्मक) थी । जीसस क्राइस्ट को तीन सौ तैंतीस वर्ष के बाद मान्यता मिली । तो सत्य बात को मान्यता मिलने में समय लगता है किन्तु अन्त में मान्यता सत्य सिद्धान्तों को ही मिलती है । इस दृष्टि से हमारा अधिष्ठान एक सत्य सिद्धान्त है अत: अन्तिम विजय के बारे में चिन्ता करने की बात नहीं है ।अधिष्ठान के विषय में विस्तृत चर्चा करने की आवश्यता नहीं है । किन्तु संकेत मात्र में यदि कहना हो तो हम कहेंगे **“आत्मनो मोक्षार्थम् जगत हिताय च”** । अपने मोक्ष के लिए अपने विकास के लिए और सम्पूर्ण जगत के कल्याण के लिए हमने सदैव सम्पूर्ण मानव जाति के लिए विचार किया है । हम लोग चीटियों को भी शक्कर खिलाने वाले हैं । हम लोग “सर्वे भवन्तु सुखिन: सर्वे सन्तु निरामया” का विचार करने वाले हैं । विश्व कल्याण का विचार और इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति का आत्मविकास जिसके फलस्वरूप वह विश्व कल्याण का उत्तम साधन हो सकता है । इसी को दूसरे ढंग से पंडित दीनदयाल जी उपाध्याय ने “एकात्म मानव दर्शन” कहा है । किन्तु वास्तव में उसके लिए एक शब्द “सनातन धर्म है” । धर्म का अर्थ बहुत व्यापक है । पूजा पाठ

करना ही धर्म नहीं है । जो धारणा करता है वह धर्म है । जो धर्म व्यक्ति स्तर पर जीवन की धारणा करता है, परिवार स्तर पर पारिवारिक जीवन की धारणा करता है, राष्ट्र स्तर पर राष्ट्र जीवन की धारणा, मानवता के स्तर पर जो मानव जीवन की धारणा करता है और विश्व स्तर पर जो विश्व जीवन की धारणा करता है, वही "सनातन धर्म" है । यह पर्यायवाची शब्द है ।

हमने हमेशा विश्व की परिभाषा में सोचा है । लेकिन जब बाजार में डालडा और वनस्पति आ जाते हैं तो घी नहीं "असली घी" की तरह अपनी भी अस्मिता अलग से देना स्वाभाविक हो जाता है । किन्तु-साथ ही साथ ऐसा भी है कि जिन्हें विश्व की चिन्ता करनी है उन्हें भी कहीं न कहीं अपना Base of operation बनाना होता है । पक्षियों में यदि किसी की सबसे ऊंची उड़ान होगी तो वह गरूड़ की होगी । आकाश में बहुत ऊँची उड़ान भरने के बावबूद वह अपना घोंसला आकाश में नहीं अपितु धरती पर या किसी पेड़ पर बनाता है । अर्थात् Base of operation कहीं न कहीं बनाना आवश्यक है । सम्पूर्ण विश्व के कल्याण का उद्देश्य होते हुए भी Base of operation अति आवश्यक है । छत्रपति शिवाजी के सामने सम्पूर्ण हिन्दवी स्वराज्य का लक्ष्य था किन्तु उन्होंने महाराष्ट्र को Base of operation बनाया । ऐसा उन्होंने इसलिए नहीं किया कि उन्हें महाराष्ट्र तक सीमित रहना है । मैजनी के सामने सम्पूर्ण इटली की स्वतन्त्रता का लक्ष्य था । किन्तु उसे Base of operation बनाने की आवश्यकता थी । इसलिए इटली के एक हिस्सा पिडमाण्ट संस्थान में उसने Base of operation बनाया । प्रिंस बिस्मार्क के सामने सम्पूर्ण जर्मनी को संयुक्त और स्वतंत्र जर्मनी बनाने का उद्देश्य था इसलिए उसने Base of operation प्रसिया को बनाया । प्रसिया तक सीमित रहना प्रिंस बिस्मार्क का उद्देश्य नहीं था, केवल पिडमाण्ट तक सीमित रहना मैजिनी का उद्देश्य नहीं था और न ही केवल महाराष्ट्र तक सीमित रहने का उद्देश्य छत्रपति शिवाजी का था किन्तु उद्देश्य बड़ा होने के नाते कहीं न कहीं Base of operation बनाना पड़ता है । इसलिए हमारा अधिष्ठान जो विश्व कल्याण का है उसका Base of operation भारत ही हो सकता है । इसलिए, इस राष्ट्र को बलवान बनाने का अर्थ है कि केवल इस राष्ट्र का ही कल्याण नहीं अपितु मानव जाति के कल्याण, सम्पूर्ण विश्व के कल्याण की आवश्यकता है । इस राष्ट्र

के बल, शक्ति और समृद्धि में तथा परम वैभव में ही विश्व कल्याण की गारन्टी है । यह श्रेष्ठ विचार हमारे देश में सनातन से चला आ रहा है ।

अधिक दिनों बाद इस राष्ट्र को बलवान बनाने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है किन्तु देश बलवान नहीं हो रहा है । इसका कुछ कारण है । ग्यारह सौ वर्ष तक हम सब जीवन-मरण के संग्राम में थे । अब हमें स्वतन्त्रता प्राप्त हुई है । अब राष्ट्र को बलवान करने की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है । राष्ट्र शक्ति की सेना विभिन्न मोर्चो पर लगी है । उसमें एक मोर्चे पर भारतीय मजदूर संघ है । अतएव हमारे कार्य का संदर्भ क्या है? यह हमारे ध्यान में रहना चाहिए । यदि यह संदर्भ हमारे ध्यान में रहेगा तो हमारी मनस्थिति में उचित परिवर्तन हो सकता है । मन- स्थिति ठीक रह सकती है और यदि हम यह नहीं समझेंगे और समाचार पत्र पढ़कर मन बनायेंगे तो हम सही मत नहीं बना पायेंगे साथ ही किसी गम्भीर विषय का सही Assesment (अन्दाज) भी नहीं लगा पायेंगे ।

यह जो हम अधिष्ठान कहते हैं क्या सदैव इसी की विजय होती है? “नहीं” । विजय हो रही है ऐसा दिखाई भी दिया । यह पीछे भी हट रहा है यह भी दिखाई दिया । धर्म के बारे में लोग कहते हैं कि सारा धर्म पीछे हट रहा है । अधर्म आगे बढ़ रहा है । हमारे इतिहास में ऐसे कई अवसर आये हैं । अन्तिम अवसर कोई तीन-साढ़े तीन सौ वर्ष पहले आया । वह भी छत्रपति शिवाजी के काल में । उस समय हिन्दुस्तान की जो स्थिति थी उसका वर्णन समर्थ गुरु रामदास ने दासबोध में किया है । आज की तुलना में उस समय सौ गुना विपरीत परिस्थिति थी । इस प्रकार की खराब परिस्थितियों में से हमारा देश गया है । लेकिन यह कहा गया है कि “Principle Stands on its own legs (सिद्धान्त अपने पैरों पर खड़ा होता है) अर्थात् सत्य सिद्धान्त की ही विजय होती है । किन्तु यह भी अनुभव में आता है कि अधर्म की शक्ति आगे बढ़ती है और असत्य सिद्धान्त की शक्तियाँ भी आगे बढ़ती हैं । इस विषय में भगवान श्रीकृष्ण ने जो स्पष्टीकरण दिया है वह ऐसा अनुभव करने वालों के ध्यान में नहीं आता। गीता का प्रसिद्ध श्लोक है -

“यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।

अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानम् सृजाम्यहम ॥

परित्राणाय साधूनाम विनाशाय च दुष्कृताम ।

धर्म संस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥"

भगवान ने कहा कि "यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति" धर्म की ग्लानि जब जब होती है । यह "यदा" शब्द दो बार आया है । इसका विचार करना है । इस शब्द का अर्थ है जब जब अर्थात् बार-बार धर्म की ग्लानि होगी । यह इसमें अभिप्रेत है । नहीं तो भगवान् श्रीकृष्ण सीधे कह देते कि जब धर्म की ग्लानि होगी मैं आ जाऊंगा । हमेशा के लिए अधर्म का नाश करके बैकुंठ में जाकर सो जाऊंगा । आप भी कम्बल लेकर सो जाना, ऐसा वे कह सकते थे । किन्तु "यदा" न कह कर "यदा-यदा" कहा । इसका स्पष्ट अर्थ है कि धर्म की ग्लानि बार-बार होगी और पुन: कहा संभवामि युगे-युगे । बार-बार अवतार धारण करने की बात भगवान् कृष्ण ने कही । यदि ऐसा होता कि एक बार भगवान् आ गए और अधर्म को नष्ट कर दिया तथा धर्म की स्थापना कर दिया तो समस्या समाप्त हो जाती । तो युगे-युगे किस लिए वे आते? बार-बार आने का अर्थ है कि धर्म की ग्लानि भी बार-बार होने वाली है । लेकिन मोहम्मद इकबाल ने कहा है कि "कुछ बात है कि हस्ती मिटती नहीं हमारी" । यूनान, मिश्र, रोम सभी मिट गये है । इनकी जैसी दशा हिन्दुस्तान की नहीं होगी । नहीं तो भगवान् कहते "यदा-यदा हि धर्मस्य मृत्युर्भवति" । जब-जब धर्म की मृत्यु होगी ऐसा न कह कर भगवान् ने धर्म की ग्लानि कहा । ग्लानि का यहाँ अर्थ है बेहोशी । धर्म नष्ट नहीं होता है । वह बेहोशी में आ सकता है । बेहोशी का अर्थ मृत्यु नहीं है । यह ग्लानि बड़ा महत्वपूर्ण शब्द है । हमें इसे समझना चाहिए । जब-जब धर्म की ग्लानि होती है का अर्थ जैसे सूर्य नारायण अखण्ड प्रकाशमान हैं किन्तु जब बादल होता है तो सूर्य देवता दिखाई नहीं देते हैं । इसका यह अर्थ नहीं है कि सूर्य नष्ट हो गया है । रात्रि के समय सूर्य और चन्द्र की स्थिति कुछ अलग-अलग होती है । तो इस कारण से सूर्यनारायण दिखाई नहीं पड़ते हैं । सूर्यनारायण अखण्ड हैं । वे चौबीसौ घण्टे रहते हैं। किन्तु हम कभी उनका दर्शन ठीक से कर सकते हैं और कभी नहीं कर सकते हैं । ग्लानि का महत्व इतना ही है कि हम कभी उनका दर्शन ठीक से कर सकते हैं कभी नहीं कर सकतें हैं । उसी तरह धर्म में ग्लानि (बेहोशी) आती है । इस हालत में सारा धर्म नष्ट हो जायेगा ऐसा नहीं है । केवल ग्लानि आती है और अधर्म की बार-बार लड़ाई भी हुई है । यह सब होते हुये भी यह जो सत्य सिद्धान्त है उसी की अन्तिम विजय होती है । किन्तु अपने कार्यकर्ताओं में भी कभी-कभी अधैर्य निर्माण होता है । ऐसी धारणा कब तक निर्माण होती रहेगी? इसका स्पष्ट अर्थ है कि अपने कार्यकर्ताओं के

मन में अपने अधिष्ठान के प्रति ठीक धारणा नहीं बन पाई है । सत्य सिद्धान्त की विजय अन्त में अवश्य होगी - यह बात हम भूल गए हैं ।

किसी भी प्रक्रिया को पूर्ण होने में समय लगता है । इस बात को कबीर ने भी कहा है

“धीरे-धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय ।

माली सीचे सौ घड़ा, ऋतु आये फल होय ॥“

आपने भी उसी तरह बीज बोया है । सींचा है । ऋतु आने पर फल प्राप्त होगा । आप चाहेंगे कि पानी डाला है शाम तक फल आ जाये ऐसा नहीं होगा । आज प्रातःकाल घी खाया है तो सायंकाल तक शरीर बढ़ जायेगा ऐसा नहीं होता है । गर्भ धारण के नौ माह बाद ही बच्चा होगा । यदि हम जल्दबाजी में हैं और चाहें कि तीन-चार माह में ही बच्चा पैदा हो जाए तो ऐसा नहीं होगा । प्रत्येक कार्य में समय लगता है । उतने समय तक प्रतीक्षा करनी होगी । यदि हम प्रतीक्षा नहीं करते तो दुष्परिणाम होगा । उदाहरण के लिए अखण्ड भारत यह एक सत्य सिद्धान्त है । सनातन सत्य है । इसे नकारा नहीं जा सकता है किन्तु भारत का विभाजन हुआ । अब उन घटनाओं के जानकार लोग लिख रहे हैं कि विभाजन अपरिहार्य नहीं था । नेताओं ने धीरज छोड़ दिया । सत्य सिद्धान्त से उनकी दृष्टि हट गई । Political power की उनकी लालच बढ़ गई । एक बार यह लड्डू उनके हाथ आना ही चाहिए चाहे आधा हो या तीन चौथाई, किन्तु आना चाहिए । पं० जवाहरलाल नेहरू ने भी कहा “we are all tired” (हम सब लोग थक गए हैं) मरने से पहले कुछ उपभोग होना ही चाहिए । यह भावना प्रबल हो गई थी । महात्मा गाँधी जी ने, मौलाना आजाद ने और अंग्रेजों ने भी लिखा है कि ये लोग अखण्ड भारत में विश्वास रखते हुए और थोड़े दिन राह देखते तो विभाजन न स्वीकार करते हुये भी स्वराज्य प्राप्त हो जाता । तीन अलग-अलग बिन्दुओं से यह बात आई है कि स्वराज्य प्राप्त होता । अखण्ड भारत को स्वराज्य प्राप्त होता । लेकिन सत्य सिद्धान्त की विजय होती है या तो इनको इस पर विश्वास नहीं या विश्वास भी होगा तो विजय हमारे जीवन काल में होगी कि नहीं पता नहीं । इतना हमने कष्ट सहन किया है कि अब जरा मरने के पहले कुछ तो आराम होना चाहिए । शायद यही भावना रही हो । कुछ भी हो जल्दी के कारण, धीरज छोड़ने के कारण महान संकट आया । इसके कारण वह स्थिर हो सकेगा क्या? पाकिस्तान मजहब के आधार पर बना किन्तु मजहब के आधार पर राष्ट्र निर्माण

हो ही नहीं सकता । मजहब के आधार पर बना राष्ट्र यह एक असत्य सिद्धान्त है । हमारे नेताओं के धीरज छोड़ने के कारण उनकी जल्दबाजी के कारण मजहब के आधार पर पाकिस्तान बना, वह टिक सकेगा क्या? पाकिस्तान के दो हिस्से हो गये । उससे आज बंगलादेश अलग हो गया । जिस समय ढाका में स्वतन्त्र बंगला देश की घोषणा हुई उस समय असत्य सिद्धान्त की मृत्यु हो गई । मजहब के आधार पर राष्ट्र निर्माण सिद्धान्त की मृत्यु हो गई । पाकिस्तान मजहब के आधार पर राष्ट्र नहीं है । सिन्धु के लोग अपनी अलग अस्मिता जता रहे हैं । बलूची अलग अपनी अस्मिता जता रहे हैं । इस प्रकार अनेक विभक्तकारी प्रवृत्तियां बढ़ रही हैं । यहाँ तक कि पाकिस्तान निर्माण होना चाहिए यह प्रस्ताव सिन्ध की ऐसम्बली में रखने वाले सत्तासी वर्षीय जी.एम. सईद आज कह रहे हैं कि मजहब के आधार पर राष्ट्र निर्माण की बात गलत है । उन्होंने जिन्ना के प्रचार के प्रभाव में आकर पाकिस्तान की मांग की थी सिन्ध के एसेम्बली में यह प्रस्ताव रखने के लिए उन्हें पाश्चाताप है । "यह तो खुदा का शुक्र है कि उसने हमें अपनी गलती का अनुभव करने के लिए लम्बी जिन्दगी दी है । अब सोचता हूं कि पाकिस्तान टिक नहीं सकता । हिन्दुस्तान के साथ हम लोगों ने कैसे ही क्यों न हो, इकट्ठा होना चाहिए ।" बादशाह खान के मन में तो पहले से ही यह बात थी । असत्य सिद्धान्त के आधार पर Timely Emotion को भड़काने के कारण जो गलत चीज निर्माण हुई थी वह टिकने वाली नहीं है । यह बात ठीक है कि उसका लाभ उठाने की हिम्मत सरकार में नहीं है । बंगला देश की भांति पाकिस्तान का Disintegration होना निश्चित है ।

असत्य अन्तर्विरोध के कारण समाप्त होता है । असत्य के खिलाफ जो शक्तियां हैं वह प्रबल है। विरोधी शक्तियों के प्रबल होने के कारण असत्य सिद्धान्त की पराजय होती है । प्रत्येक स्थान पर यह दिखाई पड़ता है । विजय तो सत्य सिद्धान्त अधिष्ठानम् की होती है । कारण कि सत्य सिद्धान्त के अन्तर्गत अन्तर्विरोध निर्माण नहीं होता है । अन्तर्विरोध निर्माण असत्य सिद्धान्त के अन्दर होता है । इसी अन्तर्विरोध के कारण शक्तियां टूटती हैं । उदाहरण के लिए जातिवाद में बहुत अन्तर्विरोध है । इसलिए यह सब कुछ नष्ट होने वाला है ।

कुछ लोगों ने अस्पृश्य समाज को संगठित करने का प्रयास किया । बाबा साहेब अम्बेडकर कट्टर राष्ट्रवादी थे, किन्तु उनके अनुयायी उनके विचारों को समझ नहीं पाये

। इसलिए उनके अनुयायियों में वह समझदारी नहीं थी जो बाबा साहब में थी। बाबा साहब के जीवन काल में बड़ी शक्तियां थीं । उनके अनुयायी अम्बेडकर को समझ नहीं सके । अबेडकर को गलत ढंग से प्रस्तुत किया गया । यह ढंग गलत था और निगेटिव था । इसलिए टिकने वाला नहीं था ।

हमारे राजनैतिक मित्र कहते थे देखिए कितना बड़ा जातिवाद का बवण्डर खड़ा हो गया है । उसी आधार पर रिपब्लिकन पार्टी खड़ी हो गई है । डा० बाबा साहब अम्बेडकर की प्रवृत्ति पॉजिटिव था । किन्तु उनके अनुयायियों में असत्य सिद्धान्त की प्रवृत्ति आने के कारण निगेटिव हो गई । परिणामस्वरूप स्वर्ण समाज के विरूद्ध निगेटिव भाव बढ़ने लगे । सबको ऐसा लगा कि सवर्ण समाज के खिलाफ अस्पृश्य एक बड़ी शक्ति निर्माण हो रही है । किन्तु प्रवृत्ति निगेटिव होने के कारण अन्तर्विरोध होना स्वाभाविक था । अगर एक बार विद्वेष की निगेटिव प्रवृत्ति आ गई तो वह प्रवृत्ति बलवान हो जाती है । जाति उपजाति का गुट, बारके गुट, लाडले गुट, बावने गुट, बावने गुट में विद्वेष फैलने लगा । क्षेत्रीय आधार पर उपजातियों में भी गुट निर्माण हुए । डा० अम्बेडकर के जीवन काल में सेड्यूल कास्ट फेडरेशन एक महान शक्ति के रूप में खड़ा हुआ । आज तो उसके टुकड़े-टुकड़े हुए । यह सब कुछ करने में विरोधियों का हाथ है ऐसी बात नहीं । यह स्वाभाविक प्रक्रिया है । जब कोई असत्य सिद्धान्त खड़ा होता है तो उसके अन्दर अन्तर्विरोध निर्माण होता ही है ।

कम्युनिष्ट तो बहुत आगे बढ़ गये । स्टेलिन के जीवन काल में तो इनका बोलबाला हो गया । दुनिया के एक तिहाई भाग पर इनका झण्डा लहराता था । पूर्वी पूरोप कम्युनिष्टों कें हाथ में आया था ।

चीन में भी कम्युनिष्टों की राज्य क्रान्ति हुई । कम्युनिष्टों की प्रतिज्ञा थी एक कम्युनिस्ट केंद्रित कम्युनिस्ट साम्राज्य सम्पूर्ण विश्व में फैलाने की । मास्को उसका केन्द्र था । भारत में विकल्प के नाते कम्युनिष्ट पार्टी आ सकती है ऐसे चुनाव परिणाम भी निकालने लगे थे । अधिकांश लोग सोचने लगे थे कि अब तो राष्ट्रवाद समाप्त हो गया । और भारत में भी साम्यवाद आने वाला है । हम लोग उस समय कहते थे कि आज दुनियां में कम्युनिष्ट शासन होता दिखाई दे रहा है किन्तु सिद्धान्त असत्य है । जब सिद्धान्त असत्य है तो उसमें कुछ अन्तर्विरोध निर्माण होगा ही । लोगों ने प्रश्न किया कि “क्या अवश्य होगा?”

हमने कहा “यह तो निसर्ग है । प्रकृति का स्वभाव है” लोगों को मेरी बात नहीं जंची । मैंने कहा “यदि कम्युनिष्टों को समाप्त करना है तो काम करने की कोई आवश्यकता नहीं है ।“ भारतीय मजदूर संघ के कार्यकताओं ने कहा कि “यह बात आशावाद से कुछ ज्यादा है” । चीन भी साम्यवादी विचारधारा को छोड़ रहा है । रूस भी साम्यवाद छोड़ रहा है । अलग-अलग कम्युनिष्ट देश जहां उनकी सरकारें थी उन्होंने भी साम्यवाद को छोड़ दिया है । एक जो केन्द्रित कम्यूनिस्ट देश की कल्पना थी आज एक कम्युनिस्ट देश दूसरे कम्युनिस्ट देश के विरुद्ध है । युगोस्लाविया के विरूद्ध रसिया है । रसिया के विरुद्ध चाइना है । चाइना के विरूद्ध वियतनाम । वियतनाम के विरुद्ध कम्पूचिया है । जैसे क्रिश्चियन राष्ट्र एक दूसरे के विरुद्ध लड़ रहे थे वैसे ही कम्युनिस्ट देश एक दूसरे का विरोध कर रहे हैं । यह दृश्य हम देख रहे हैं । भारत में भी एक केन्द्रित कम्युनिस्ट पार्टी थी । पहले उसके दो भाग हो गये । बाद में और तीन भाग हो गये । गृह मंत्रालय की सूचनानुसार पांच सात भाग पहले थे और अब इक्कीस अलग-अलग ग्रुप हो गये हैं । जिसमें नक्सलाइट ग्रुप अधिक है । सम्पूर्ण दुनिया को एक करने की कल्पना करने वाले लाल झण्डे के अन्दर अब ग्रुप ही ग्रुप हैं । अब तो उनमें ग्रुप की संख्या निरन्तर बढ़ रही है । दुनिया में एक दूसरे से लड़ने वाली कम्युनिस्ट पार्टियां और कम्युनिस्ट देश निर्माण हो गये । पहले जब रूस के प्रमुख भारत आते थे तो वे आने से पूर्व भारत सरकार को सूचना भेजते थे कि सी.पी.एम. और सी.पी.आई. से मिलना है इसलिए उनके नेताओं से मिलाने की व्यवस्था भारत सरकार करती थी । इस समय जब गोर्वाचोव भारत आये तो उन्हें बुलाया तक नहीं । इस कारण कम्युनिस्ट नाराज हुए ।

सत्य को फैलने में समय लगता है । यह जो साम्यवाद में इतना अन्तर आया है, क्या हमारी ताकत के कारण हैं, नहीं । असत्य सिद्धान्त में अन्तर्विरोध आते ही हैं । यह अन्तर्विरोध निर्माण होना स्वाभाविक है । अन्तर्विरोध निर्माण होने में भी समय लगता है । अन्त में जी. एम. सईद ने कहा कि पाकिस्तान की मांग करके हमने गलत बात की । हिन्दुस्तान में ही रहना चाहिए था । लेकिन यह बात उन्होंने चालीस साल बाद कही । Realisation हुआ । धीरे-धीरे शेष लोगों के मन में भी Realisation हुआ । अब तो ऐसी स्थिति बन गई है कि पाकिस्तान टूटने वाला है। लेकिन Realisation होने में शेष लोगों को समय लगा । आप कहेंगे कि हमने सत्य सिद्धान्त का प्रतिपादन किया तो वह आज विजयी क्यों नहीं हो रहा है । यह बात पहले कही जा चुकी है कि ऋतु आये फल

होत । सिद्धान्त को भी जब तक ऋतु नहीं आती है फल नहीं प्राप्त होता है । यदि फल न दिखाई दे तो यह समझना कि बीज बोया, पानी डाला किन्तु फल दिखाई नहीं देता है इसलिए सब कुछ व्यर्थ है ऐसा सोचना गलत है । इसलिए सत्य सिद्धान्त हमारा अधिष्ठान, तथा धर्म यह नष्ट नहीं होता है । इसकी ग्लानि हो सकती है । बेहोशी आ सकती है । किन्तु होश में आता है और विजयी होता है । अब इसकी जो विजय है उसमें हमारा भी योगदान रहे इसलिए हम कर रहे हैं । अपने काम का यह जो स्वरूप है, सिद्धान्त है, विजयी होने वाला ही है । उसके हम समर्थक हैं । जैसे जगन्नाथ जी के रथ के बारे में कहा गया है कि जगन्नाथ जी का रथ आगे बढ़ने वाला ही है । ऐसा नहीं कि जगन्नाथ के रथ को हाथ न लगाऊं तो वह आगे नहीं बढ़ेगा । मैं नहीं तो कोई और जगन्नाथ जी के रथ को आगे बढ़ाएगा ही । वैसे ही जिस सिद्धान्त और अधिष्ठान को लेकर हम काम कर रहे हैं वह तो विजयी होने वाला ही है । यह एक सर्वंकष कार्य है । उसी का एक अविभाज्य अंग अर्थात् अपना यह कार्य है । अपने कार्य का यह स्वरूप समझते हुए पूर्ण विश्वास के साथ काम करें । विजय विश्वास के साथ काम करें । मैंने आत्मविश्वास शब्द का प्रयोग नहीं किया है । क्योंकि यह शब्द बड़ा फिसलने वाला है । आत्म-विश्वास से अहंकार तक आदमी कब पहुंच जाएगा यह कहना बड़ा कठिन है । इसलिए सम्पूर्ण विजय विश्वास रखकर काम करें, हमारा सिद्धान्त विजयी होने वाला ही है । केवल हमारे कर्तृत्व के कारण क्या? ऐसा नहीं है । हम काम करेंगे तो भी होगा । हम काम नहीं करेंगे तो भी होगा । साधन के रूप में भी यदि अयोग्य सिद्ध हुए तो भी होगा ।

हमारे सिद्धान्तों की विजय निश्चित है । हमारा यही प्रयास रहे कि ऐसा होने का अवसर न आए । हम उनके साथ रहेंगे, जो विजय की पताका हिमालय की तुंग श्रृंग पर फहराने को तैयार हैं । इस तरह का एक विजय विश्वास लेकर चलने की आवश्यकता है ।

अधिष्ठान तथा कर्ता में कर्ता का महत्व है । हम कर्ता हैं इसलिए कर्ता की भूमिका हमें समझ लेना चाहिए । भारतीय मजदूर संघ के साथ शेष बातें नहीं हैं । हमारा आधार तो कार्यकर्ता है । कार्यकर्ता के नाते हमारी जिम्मेदारी क्या है? इसे समझ लेना चाहिए । बाहर के वायुमण्डल में आजकल यही प्रचलित हो रहा हैं कि साधन सामग्री की विपुलता एवं प्रचुरता, भवन, पैसा तथा अधिक प्रसिद्धि इसी के सहारे किसी कार्य में विजय

मिलती है । किन्तु जो शक्ति संगठन में है, वह साधन सामग्री में नहीं है । संगठन कार्यकताओं की गुणवत्ता पर आधारित है । छत्रपति शिवाजी का इतिहास सब कोई जानते हैं । जब ये दक्षिण विजय की ओर जा रहे थे तो जिस रास्ते से वे जा रहे थे वह रास्ता कुतुबशाह के राज्य से होकर जाता था । कुतुबशाह से तो लड़ाई लड़नी नहीं थी केवल रास्ता मांगना था । इस हेतु कुतुबशाह से बात-चीत की गई । कुतुबशाह ने कहा कि "हम आपका स्वागत करते हैं । आप की सेना का सम्पूर्ण प्रबन्ध हम करेंगे । आप हमारे राज्य में से जा सकते हैं । इसलिए कुतुबशाह के राज्य में इनकी सेना का शिविर हो गया । एक समय कुतुबशाह और छत्रपति शिवाजी एकत्रित बैठे थे । आपस में गपशप हो रही थी । कुतुबशाह भी चतुर था । उसने गुप्तचर के माध्यम से शिवाजी की सेना के मजबूत और कमजोर बिन्दु को जानना चाहा । जब गुप्तचरों ने जानने का प्रयास किया तो उन्हें यह देखकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि शिवाजी की सेना में एक भी हाथी नहीं था । पहले चतुरंग सेना में हाथी का रहना आवश्यक था । जिस सेना में हाथी न हो वह अपूर्ण है ऐसा माना जाता था । शिवाजी की सेना बहादुरी के लिए प्रसिद्ध थी किन्तु उसमें हाथी नहीं थे । यह कमी जब कुतुबशाह को ज्ञात हुई तो बात के दौरान कुतुबशाह ने कहा कि आपके हाथी और मेरे हाथी की लड़ाई होनी चाहिये । शिवाजी ने तपाक से कहा, "ठीक है लड़ाई कब होनी चाहिए बताइए ।" "कल होगी" "ठीक है" घोषणा हो गई कि दोनों तरफ की हाथियों की टक्कर होगी । दूसरे दिन मैदान में कुतुबशाह का मस्त हाथी लाया गया । उसके सूंड में एक दुधारी तलवार थी । सब लोग जो मैदान में दो हाथियों का युद्ध देखने के लिए एकत्रित थे बड़े कुतुहल से शिवाजी के हाथी की प्रतीक्षा करने लगे । इतने में एक छोटे कद का कार्यकर्ता येशाजी दोनों हाथ में खड़ग लेकर आये । वे हाथी की तरफ बढ़ने लगे तथा हाथी उनकी ओर बढ़ने लगा । लोग चिल्लाये यह तो मर जायेगा । अरे! शिवाजी ने क्या बेवकुफी की है । यह छोटे कद का आदमी हाथी से कैसे टक्कर ले सकता है । किन्तु येशाजी हाथी की ओर दौड़ा और हाथी येशाजी पर झपटा किन्तु बड़ी चपलता से हाथी का चक्कर लगाते हुए पीछे से पूछ पकड़कर येशा हाथी की पीठ पर चढ़ गया । उसने तलवार को उसके गण्डस्थल पर रखा । हाथी चिल्लाता हुआ मैदान छोड़कर भागा । सभी को आश्चर्य हुआ । शिवाजी ने कुतुब से कहा "हमारी सेना के पराक्रमी कार्यकर्ता ही हमारे हाथी हैं ।" इसी प्रकार भारतीय मजदूर संघ के पास साधन सामग्री नहीं है और न आने वाली है । हमारे

कार्यकर्ता हाथी वाला काम करते हैं । आज भी कर रहे हैं और कल भी करेंगे । कार्यकर्ता की गुणवत्ता से ही शक्ति खड़ी होने वाली है । यह बात बहुत लोगों की समझ में नहीं आती है । आज प्रजातन्त्र का युग है हम प्रजातन्त्र में ऐसा वायुमण्डल देखते हैं कि जिसको वोट अधिक मिलता है । वह चुनकर आता है तो कहते हैं कि संख्या में बल है । ठीक है आज भारतीय मजदूर संघ की सदस्य संख्या भी बत्तीस लाख तक है । किन्तु केवल संख्या ही शक्ति नहीं है । बल्कि भारतीय मजदूर संघ नम्बर दो पर है किन्तु कार्यकर्ता की गुणवत्ता नम्बर एक की शक्ति है । हम हमारी गुणवत्ता को और अधिक बढ़ाने का प्रयास करें । हम और अधिक कार्यकर्ता बढ़ाने का प्रयास करें । कार्यकर्ताओं की ध्येय निष्ठा व गुणवत्ता बढ़ाने का प्रयास करें । एक महान शक्ति का निर्माण कार्यकर्ता की शक्ति के आधार पर हो सकता है । वैसे हमें अपने क्षेत्र में काम तो करना ही होता है । अपना कार्य क्षेत्र ऐसा है कि यदि हम काम नहीं करेगे तो मजदूर हमारी पिटाई कर देगा । यह कोई राजनीतिक क्षेत्र नहीं है कि नेताजी के मन में आया तो कर दिया नहीं तो फोन पर बता दिया कि नेताजी गांव गये हैं । ऐसी बहाने-बाजी यहां नहीं चल सकती है । प्रत्येक दिन सुबह ५ बजे से रात के दो बजे तक यदि काम नहीं करेंगे तो मैनेजमेन्ट या सरकार ही नहीं हमारे मजदूर भी हमारी पिटाई करेंगे। ऐसा अपना कार्यक्षेत्र है । प्रसन्नतापूर्वक काम करने के कारण हमारी संख्या भी बढ़ी है तभी हम नं० दो पर पहुंच गये हैं । लेकिन जो शक्ति है वह कार्यकर्ता और उसकी गुणवत्ता है । इसमें शक्ति है । कार्यकर्ता जितना ध्येयवान और गुणवान रहेगा उतनी ही संगठन की शक्ति बढ़ेगी । यह जो बाहर का वायुमण्डल है कि जिसकी अधिक संख्या दिखती है या जिनका अधिक बोलबाला है वह बलवान व शक्तिशाली है । यह माप दण्ड टिकने वाला नहीं है । यह कसौटी सही नहीं है । संख्या एक तरफ और गुणवत्ता एक तरफ रखकर हम विचार करते हैं तो संख्या का नम्बर दो और कार्यकर्ता के गुणवत्ता का नम्बर एक हो जाता है । इस दृष्टि से हम अपनी गुणवत्ता जिसमें ध्येय निष्ठा का समावेश होता है को बढ़ाने का प्रयास करें । विवेकानन्द जी ने कहा है कि अलग-अलग केमिकल्स इकट्ठा डालना यह अपना काम है उसका स्वाभाविक रूप से Crystallization होने वाला है, और होकर रहेगा । इसकी चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है । कार्यकर्ता महत्व की बात है । कार्यकर्ता की गुणवत्ता महत्वपूर्ण है । आज प्रजातन्त्र और चुनाव के युग में जब संख्या का विचार करते हैं तो एक उदाहरण मन में आता है । गुणवत्ता एक तरफ और संख्या

एक तरफ ऐसा भी कभी हमारे इतिहास में अवसर आया है । इसका भी यह अर्थ नहीं है कि संख्या का महत्व नहीं है । प्रतिवर्ष वार्षिक विवरण पत्र में संख्या का महत्व है । सदस्यता अभियान भी संख्या के महत्व को बताता है । संख्या के आधार पर हम नंबर दो पर हैं । किन्तु संख्या से भी महत्वपूर्ण कार्यकर्ता की गुणवत्ता है ।

महाभारत में एक घटना का उल्लेख है । कौरव-पाण्डव दोनों अपनी संख्या बढ़ाने का प्रयास कर रहे थे । अलग-अलग राजाओं और योद्धाओं के पास जा रहे थे और कह रहे थे कि आप हमारे पक्ष में लड़ाई लड़े । दोनों पक्ष भगवान् कृष्ण के पास पहुंचे । अर्जुन भी थे, दुर्योधन भी थे । भगवान् कृष्ण ने कहा, “आप दोनों में, मैं किसी को नाराज नहीं कर सकता । अब एक ही काम हो सकता है कि छप्पन करोड़ की मेरी सेना है और दूसरी ओर मैं हूं । अब किसको क्या चाहिए? बताइए” । दुर्योधन ने संख्या का विचार करते हुए छप्पन करोड़ की सेना मांगी । अर्जुन ने गुणवत्ता पर विचार करते हुए अकेले भगवान् कृष्ण को अपनी ओर आने को कहा । गुणवत्ता और संख्या में इतना अन्तर होता है । कार्यकर्ता की गुणवत्ता जिसमें ध्येय निष्ठा का समावेश हो जैसे एक दीप दूसरे दीप को जलाता है उसी प्रकार ध्येय निष्ठ कार्यकर्ता अपनी गुणवत्ता को दूसरों में प्रवेश करायेगा । कार्यकर्ताओं में गुणवत्ता हमारे सहवास के कारण आती है । इसलिए हम कार्यकर्ता का निर्माण करें । ऐसा करने से महान् शक्ति का आधार निर्माण होगा ।

इस दृष्टि से हमें ट्रेड यूनियन का कार्य कैसे करना है यह सारा विचार करेंगे । हम स्वयं अपनी ध्येय निष्ठा गुणवत्ता कैसे बढ़े? इसका प्रयत्न करे तथा हम अपने ही जैसे ध्येयनिष्ठ कार्यकर्ताओं का निर्माण कैसे करें, इस पर एकाग्रचित्त होकर विचार करें । आज ऐसा प्रयत्न करने की अत्यन्त आवश्यकता है । परमपूज्यनीय डाक्टर साहब की जन्म शताब्दी का यह वर्ष है । हमें इस वर्ष में शेष जो काम करने हैं वह हम भले ही करें किन्तु प्रत्येक कार्यकर्ता को इस वर्ष को “संकल्प वर्ष” के नाते मनाना चाहिए और इसमें यही संकल्प करना चाहिए कि कार्यकर्ता के नाते मैं ध्येय अनुकूल रहूंगा । ध्येय समर्पित रहूंगा । मैं कार्यकर्ताओं का निर्माण करूंगा । अपने वरिष्ठ अधिकारियों को हिसाब देने की आवश्यकता नहीं है । इसका सर्वाधिक हिसाब-किताब यही करना है कि मैं अच्छा कार्यकर्ता बनूँगा । स्वयं अच्छा, गुणवान एवं ध्येय निष्ठ कार्यकर्ता बनूँगा और ध्येय निष्ठ गुणवान कार्यकर्ताओं का निर्माण करूँगा । इस दृष्टि से संकल्प वर्ष के नाते जन्म शताब्दि

वर्ष हम मनायें । यदि यह हो जाता है तो शेष बातें हो जायेंगी । अधिक चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं है ।

राष्ट्र शक्ति

हमारा यह कार्य कोई पृथक कार्य नहीं है । हिन्दुस्तान की राष्ट्र- शक्ति, उसकी सेना, उस सेना का एक विभाग जो मजदूर मोर्चे पर लगा है, भारतीय मजदूर संघ है । अपना कार्य सर्वंकष, सर्वांगीण योजना के अंग के नाते चल रहा है । यदि भारत की राष्ट्र शक्ति की सेना के एक विभाग के नाते हम काम कर रहे हैं तो हमारी मनस्थिति क्या रहे? यह बात भी सामने आती है । मनोवृत्ति दो प्रकार की हो सकती है । पहली मनोवृत्ति कम्युनिष्टों को परास्त करने की दृष्टि से सरदार बल्लभ भाई पटेल द्वारा बनाई गई आई० एन० टी० यू० सी० में मिलती है । जब आई० एन० टी० यू० सी० का निर्माण हुआ तो यह कांग्रेस का केवल अंग बन कर रहेगी, ऐसी बात नहीं थी । आई० एन० टी० यू० सी० कांग्रेस की राष्ट्रवादी शक्ति के अंग के नाते रहेगी, ऐसी उनकी मंशा थी । सरदार पटेल के पास कई यूनियनें भी थी, पैसा भी था, कार्यकर्ता भी थे, बड़ी-बड़ी बिल्डिंगें भी थी तो भी कार्यकर्ताओं का सरदार बल्लभ भाई पटेल के पास प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से आना या गुलजारीलाल नन्दा के पास पहुंचना और कहना कि श्रीमान् जी! बड़ी कठिनाई है, कम्युनिष्टों का काम बहुत बड़ा है, मुकाबला करना है, तो आपको आर्थिक सहायता करनी होगी । अधिक पैसा खर्चा करना होगा । यदि आप सब प्रकार से सहायता नहीं करेंगे, तो काम नहीं होगा । आई० एन० टी० यू० सी० के कार्यकर्ताओं की मनस्थिति उस छोटे बालक की तरह हो गई थी, जिसे बचपन में पिता जी या कोई गुरुजन चलना सिखाते हैं । बालक चल नहीं सकता तो उद्देश्य यही रहता है कि उंगली पकड़ कर चलना सीखे । धीरे-धीरे अभ्यास हो जायेगा और बाद में वह अपने आप पैरों पर चल सकेगा और उसे किसी के सहारे की आवश्यकता नहीं होगी लेकिन बल्लभ भाई पटेल का यह लड़का ऐसा निकला कि उंगली पकड़ कर स्वयं चलना तो सीखा नहीं, बल्कि उंगली पकड़ कर गोद में बैठने का प्रयास किया । परिणाम स्वरूप आई० एन० टी० यू० सी० में परावलम्बन आ गया । यह रवैया उसमें आज भी दिखाई देता है । लेकिन जो बड़े उद्देश्य से काम करते हैं उनकी मनोवृत्ति इस प्रकार की नहीं रहती है कि जब उंगली पकड़ कर चल रहे हैं तो फिर अपने पैरों के बल पर क्यों चलना? अन्ततोगत्वा गोद में बैठेंगे और आराम से रहेंगे । ऐसी मनोवृत्ति के कार्यकर्ता कहते है कि यदि काम आपने

बताया है तो पैसा भी देने की जिम्मेदारी आपकी है । हमारे कार्यकर्ताओं की मनोवृत्ति ऐसी नहीं है ।

दूसरी मनोवृत्ति हमें अपने इतिहास को देखने से मिलती है । हिन्दू साम्राज्य को नष्ट करने की औरंगजेब ने पूरी कोशिश की । जब औरंगजेब की मृत्यु हुई । छत्रपति शाहू महाराज पुन: छत्रपति हो गये । किन्तु उस समय उनका अपना साम्राज्य आदि कुछ नहीं था । सम्पूर्ण प्रदेश ध्वस्त था । राज्य के पास सेना नहीं थी, सेनापति नहीं थे, पैसा नहीं था, कुछ भी नहीं था । ऐसे समय प्रधानमंत्री बाजीराव प्रथम छत्रपति के पास पहुंचे और कहा- "आप हमको आज्ञा दीजिये, आशीर्वाद दीजिये हम दिल्ली तक विजय करके आयें ।" छत्रपति को आश्चर्य हुआ और कहा- "आप मुझसे आज्ञा माँग रहे हैं? अपने पास है क्या? दिल्ली तक विजय करने के लिए तो बहुत बड़ी सेना चाहिये । बहुत पैसा चाहिये । साधन सामग्री चाहिये । हमारे पास तो कुछ भी नही है और जब मेरे पास साधन सामग्री नहीं, पैसा नहीं तब मैं दिल्ली तक विजय करने की आज्ञा आपको कैसे दे सकता हूँ ?उस समय बाजीराव ने छत्रपति शाहू महाराज को पत्र लिखा-"आपको कुछ देने की आवश्यकता नहीं है । केवल आज्ञा और आशीर्वाद दीजिये । आपके आशीर्वाद से जितनी सेना चाहिये उतनी सेना, जितना पैसा चाहिये उतना पैसा, वह सब कुछ हम इकट्ठा करेंगे । बाजीराव के पराक्रम का वर्णन इतिहास में पढ़ने को मिलता है । आई० एन० टी० यू० सी० से भिन्न यही दूसरी मनोवृत्ति है । हमारे यहाँ ऐसा नहीं कि आपने बताया तो आप ही सब कुछ कीजिये । यहाँ तो है, आप आज्ञा दीजिये । आशीर्वाद दीजिये । हम सब कुछ कर लेंगे । कार्यकर्ताओं की सेना खड़ी करेंगे । कोष निर्माण करेंगे । रामायण में एक छोटा-सा पहलू कितने लोगों के ध्यान में आया पता नहीं, किन्तु इतना तो सभी जानते हैं कि दक्षिण में, जब रामचन्द्र जी पहुंचे, रावण के साथ झगड़ा खड़ा हुआ । लड़ाई की नौबत आ गई । रामायण में सब कुछ विस्तार से लिखा गया है । लेकिन यह बात किसी किसी के ध्यान में आई क्या कि राम को रावण के साथ लड़ाई लड़नी है और परिस्थिति "रावण रथी विरथ रघुवीरा" की है । उस समय राम को अधिक से अधिक शक्ति इकट्ठा करने की आवश्यकता थी । इसलिए राम ने दक्षिण से ही वानर सेना तैयार की । यह सबको पता है कि रामचन्द्र जी केवल अयोध्या में ही नहीं अपितु उत्तर भारत में बहुत लोकप्रिय थे । उत्तर भारत में कई राज्य फैले हुए थे । रावण के साम्राज्य के साथ टक्कर लेना है, यदि ऐसा सोचकर रामचन्द्र जी ने सन्देश भेजा होता

कि मैं यहाँ लड़ाई के संकट में हूं, इसलिए वहाँ से सेना सामग्री आदि आना चाहिये तो साधन सामग्री अयोध्या से आ सकती थी । रामचन्द्र जी के लिए सिपाही, पैसा और कोष अयोध्या से आ सकता था । केवल अयोध्या से नहीं तो सम्पूर्ण उत्तर भारत से सेना सामग्री चली आती, कारण कि श्रीराम की लोकप्रियता थी । लेकिन उन्होंने एक बार दक्षिण जाने के बाद एक भी सिपाही और पैसा नहीं मंगवाया । रावण को उखाड़ना था अतएव जहाँ गये उसी क्षेत्र से सेना खड़ा किया, मित्र खड़े किए । साधन सामग्री खड़ी की । सब जुटाया और लड़ाई लड़ी । अयोध्या से एक सिपाही नहीं माँगा, एक पैसा नहीं माँगा । जबकि वे माँगते तो सब कुछ आ जाता, पर माँगा नहीं । तो यह वृत्ति उंगली पकड़ करके बाद में गोद में बैठने वाली मनोवृत्ति नहीं है । बल्कि उंगली पकड़ कर थोड़ा चलना सीख लिया है, अब अपने पैरों पर चलेंगे की मनोवृत्ति है । जो क्षेत्र अपने को दिया गया हम उसमें अपने कर्तृत्व से साधन सामग्री जुटाना, कार्यकर्ता खड़ा करना ऐसे प्रयास को स्वावलम्बन मनोवृत्ति कहते हैं ।

अब इस दृष्टि से हर एक कार्यकर्ता को अपनी शक्ति बढ़ाने की आवश्यकता है । आज कुछ कार्यकर्ताओं में यह क्षमता है किन्तु सभी कार्यकर्ताओं में नहीं है । इस प्रकार की शक्ति बढ़ाने की आवश्यता है । शक्ति कैसे बढ़ती है? शक्ति से हमारा मतलब क्या है? यदि शारीरिक शक्ति का विचार किया गया तो हमसे कुछ ऐसे हैं जो काफी तन्दुरुस्त हैं, जवान हैं, शायद किसी भी ओलम्पिक में भाग लेने योग्य हैं । किन्तु ऐसे लोग कम हैं । अधिकांश लोग ऐसे हैं जिनका कुछ दर्द कर रहा है । उम्र भी तो हो गई है । किन्तु शक्ति का अर्थ शारीरिक शक्ति से नहीं है । शारीरिक शक्ति कम रहे या अधिक आदमी ठीक ढंग से काम कर सकता है । पश्चिम के लोग ऐसा विचार करते हैं, कि शारीरिक शक्ति क्षीण हो जायेगी तो फिर क्या होगा? किन्तु यहां तो अन्तिम दम तक आदमी काम करता है । अनेक उदाहरण हैं । आज - कल कम्युनिष्ट जगत में और पश्चिम में गुरिल्ला वार के नये तन्त्र के जन्मदाता चै-ग्वेवारा ने गुरिल्ला युद्ध लड़ने का नया तंत्र दिया । फिडेल कास्ट्रो ने क्यूबा में चै-ग्वेवारा की सहायता से राज्य प्राप्त करने के बाद इनको रिजर्व बैंक का गर्वनर नियुक्त किया । अब रिजर्व बैंक या सैन्ट्रल बैंक का गर्वनर बड़े आराम के स्थान हैं । लेकिन यह ऐसे ध्येयवादी थे कि इन्होंने जब सुना कि दक्षिणी अमेरिका में कई प्रदेशों में डिक्टेटर-शिप चल रही है और वहाँ लोग स्वातन्त्रय की लड़ाई लड़ रहे है । तो सेन्ट्रल बैंक के गर्वनर का आराम का स्थान छोड़ कर हाथ में रायफल लेकर

बोलीविया चले गये, वहाँ स्वातन्त्रय युद्ध में भाग लिया । और जंगल में रहते हुये गुरिल्ला युद्ध किया और वहीं घायल होने से उनकी मृत्यु भी हुई। लेकिन यह सब करने के लिये क्यूबा उन्होंने छोड़ा, गवर्नरशिप छोड़ी । उस समय वह काफी बीमार थे । उनको ब्रोनकाइटिस अस्थमा जैसी बीमारी थी । जंगल में रहते हुये अन्डर ग्राउन्ड काम कर रहे थे । घोर बीमारी की अवस्था में उन्होंने युद्ध का संचालन किया । ऐसा उनका इतिहास बताता है । अपने यहाँ राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरकार्यवाह माननीय माधवराय जी मुले का उदाहरण हम सब लोग जानते हैं । अब उनकी मृत्यु हो गई है । लेकिन जिस समय आपातकाल था, इमरजेंसी थी, बहुत खराब तबीयत थी । इमरजेंसी के बाद ही उनकी मृत्यु हुई । लेकिन इतनी खराब तबीयत होते हुए भी सम्पूर्ण Under ground activities का संचालन माधवराव जी ने जिस ढंग से किया, यह हम सब जानते हैं । चारू मजुमदार का उदाहरण हम लोग जानते हैं । एक नया नक्सलवादी आन्दोलन शुरू हुआ । चारू मजूमदार की शारीरिक स्थिति अच्छी नहीं थी । वह तपेदिक रोगी थे और अत्यन्त नये क्रान्तिकारी आन्दोलन का सूत्रपात करने वाले चारू मजूमदार को जब गिरफ्तार किया गया तो सबको आश्चर्य हुआ कि उनके पास कोई हैंड ग्रेनेड नहीं था, कोई रायफल नहीं थी, पिस्तौल नहीं थी बल्कि उनके पास केवल आक्सीजन का सिलिन्डर था । घोर बीमारी की अवस्था में सक्षमता के साथ चारू मजूमदार ने एक नये ढंग के क्रान्तिकारी आन्दोलन का सूत्रपात और संचालन किया ।

शिक्षा भी मात्र एक कसौटी नहीं है ऐसे अनेक श्रेष्ठ पुरुष हैं जो शिक्षा के क्षेत्र में भी यशस्वी नहीं हुए । पाठशाला या कालेज में यशस्वी नहीं हुए । और बाद में अपनी जिद एवं एकाग्रता के कारण बहुत अच्छे ढंग से ज्ञानार्जन किया । ऐसे अनेक उदाहरण हैं । उनमें रविन्द्रनाथ टैगोर का नाम लिया जा सकता है । सबसे बड़ा उदाहरण तो आंइस्टीन का है । आंइस्टीन सर्वश्रेष्ठ वैज्ञानिक माने जाते हैं, लेकिन पाठशाला में वह अच्छे विद्यार्थी नहीं थे । उनके अध्यापक ने लिखा था कि यह बड़ा मन्दबुद्धि का विद्यार्थी था । इसका अध्ययन की ओर ध्यान ही नहीं लगता था । अध्यापक ने आंइस्टीन से यह आशा छोड़ दी थी कि वे कभी बड़ी परीक्षा उत्तीर्ण हो सकेंगे । बाद में जब आंइस्टीन का चित्त एकाग्र हुआ तो वे प्रथम श्रेणी के वैज्ञानिक हुए । केवल पाठशाला में, स्कूल में, हाईस्कूल में कॉलेज में हमने कौनसी डिग्री प्राप्त की है यही शक्ति नहीं है । शक्ति से हमारा मतलब है समझदारी । चौथी कक्षा भी फेल हुए तो आपत्ति नहीं । हमारा स्वास्थ्य भी ठीक न

हो तो कोई आपत्ति नहीं । शक्ति बढ़ानी है, इसका मतलब है कि हममें से हर एक की अपनी समझदारी बढ़नी चाहिये । अंग्रेजी में जिसको Under standing कहा जाता है । हमारी समझदारी (Under standing) जितनी मात्रा में बढेगी उतनी ही मात्रा में शक्ति भी बढ़ेगी ।

कोई अकेली एक मात्र वस्तु ऐसी नहीं है अपितु अनेक और बातें हैं जिनको यदि हम बढ़ाते हैं तो हमारी शक्ति बढ़ती है । भले ही शरीर से बहुत दुर्बल क्यों न हो । विकलांग क्यों न हों । कोई परीक्षा हमने पास न भी की हो फिर भी कुछ ऐसी बात हैं जिनके होने से हमारी कार्य करने की शक्ति, कार्यकर्ता की शक्ति बढ़ती है । सुप्रसिद्ध उदाहरण है । हम सब जानते हैं कि महाभारत की लड़ाई के प्रारम्भ में अर्जुन के मन में दुर्बलता आ गयी थी उन्होंने धनुष बाण रथ में रख दिया । बैठ गये, और भगवान श्रीकृष्ण से कहा अब मैं लड़ने वाला नहीं हूँ । आप अब मुझे मत सताइये । मैंने तय किया है कि अब मैं नहीं लडूंगा । "इससे अधिक दुर्बलता क्या हो सकती है? पर गीता के अन्तिम अध्याय में वही अर्जुन कहते हैं करिष्ये वचनं तव (जो आप कहेंगे वही मैं करूंगा) ।" लड़ने के लिए तैयार । सब कुछ करने को तैयार । बीच में यह परिवर्तन (Transformation) कैसे हुआ? जो आप कहेंगे वह मैं करूंगा । तो इतनी ताकत कहां से आयी । भगवान कृष्ण ने उनको क्या दिया? क्या ऐसा हुआ कि कुछ नये सेना के विभाग जोड़ दिये? क्या नये शस्त्रास्त्र लाये? या एटम बम आदि आ गये? ऐसा कुछ नहीं । गीता के प्रारम्भ से अन्त तक बाहरी परिस्थिति में कोई परिवर्तन नहीं आया । बाहर की स्थिति (Situation) में कोई अन्तर नहीं आया ।

अन्तर आया केवल अर्जुन की मन: स्थिति में, बाहर की स्थिति जो पहले थी वही अन्त में रही । अर्थात् अर्जुन की समझदारी बढ़ गयी, समझदारी बढ़ने के कारण जो अर्जुन कहता था कि नहीं लडूंगा वही युद्ध करने को तैयार हुआ और अन्त में कहा "करिष्ये वचनम् तव" । सेना के कारण नहीं, नई सेना सामग्री आ गयी उसके कारण नहीं केवल समझदारी (Under standing) बढ़ने से आ गयी, जो पहले नहीं थी । हमारी जो शक्ति बढ़ती है वह समझदारी (Under standing) के कारण बढ़ती किसी भी काम में सफलता या असफलता के लिए भगवान ने पांच बातें बतायी है-

"अधिष्ठानं तथा कर्ता, करणं च पृथग्विधम्।

विवधाश्च पृथक्चेष्टा, दैवं चैवात्र पंचमम् ॥“

“यह पांच बातें मिलकर सफलता असफलता का निर्णय करती हैं ?” भगवान ने कहा । इसमें पांचवा जो दैव है - उसका अर्थ किस्मत या भाग्य नहीं है । गीता पर जिन्होंने भाष्य किया ऐसे आचार्यों का कहना है कि प्रत्येक कार्य का अधिष्ठाता देवता होता है । अर्थात् देवता की अनुकूलता । सर्व सामान्य नियम यही है कि यदि हमारा संकल्प सत्य है और हमारे इरादे ठीक हैं तो देवता और भगवान की अनुकूलता रहती है, आशीर्वाद रहता है, कहा गया है कि सत्य संकल्प का दाता भगवान होता है । तो यह जो पांचवा फैक्टर दैवं चैवात्र पंचमम् है का अर्थ किस्मत नहीं है । प्रत्येक कार्य का अधिष्ठाता देवता है और इसकी जो अनुकूलता है, इसका जो आशीर्वाद है, हमारा जो संकल्प है सत्य या असत्य वह इस पर अवलम्बित है । तो यह हमारे सोचने की बात है कि हम संकल्प अच्छा रखें । इसमें कोई मिलावट न आ जाये । मिलावट बहुत बार आती है । इसके लिए सावधान रहने की आवश्यकता है । बहुत बार अपने को पता न लगते हुए भी मिलावट आ जाती है । ध्येयवादी मनुष्य में भी मिलावट आ जाती है । स्वयं अपने को भी पता नहीं चलता है कि किस तरह अच्छी भावनाओं के साथ गलत भावनायें सम्मिलित हो रही हैं । बिल्कुल पता नहीं चल पाता है । १९५२ में जब मेरे पास राजनैतिक काम था तो श्री द्वारिका प्रसाद जी मिश्र जिनका नाम बहुत प्रसिद्ध है, उनके पास हमें बैठने का बहुत बार अवसर मिला । हम बातें भी वहां करते थे और उस समय के सरकार्यवाह माननीय भैया जी दाणी को उसकी रिपोर्टिंग भी करते थे । जब Nigotiation की सभी बातें पूरी हो गयी मैंने एक दिन माननीय भैया जी दाणी से कहा, “भैया जी आप कुछ भी कहिए वैसे तो Politician के बारे में आपका अभिप्राय अच्छा नहीं रहता है । किन्तु मुझे ऐसा लगता है कि श्री द्वारिका प्रसाद जी मिश्र कट्टर हिन्दुत्ववादी एवं कट्टर ध्येयवादी हैं । वह हिन्दुत्व निष्ट हैं । माननीय भैया जी दाणी ने कहा “वह कुछ और भी है - पचास-साठ प्रतिशत द्वारिका प्रसाद मिश्र ।“ जब यह ध्येयवादी व्यक्ति के बारे मे भी हो सकता है तो हमें आत्म निरीक्षण करने की बहुत आवश्यकता है । हम ध्येय के लिए कोशिश करते हैं तो भी अपना अहम हम विलीन नहीं कर सकते हैं । ऐसे भी उदाहरण हैं कि कुछ लोग महान आत्मयज्ञ कर लेते हैं । लेकिन महान आत्मयज्ञ करते समय यदि भावना यह रही कि यह मैं कर रहा हूँ, इसमें मेरा नाम होगा तो इसमें आत्मयज्ञ में गिरावट हो जाता है । ध्येयवाद और अहंवाद दोनों

साथ-साथ रहते हैं । किन्तु अपने को पता नहीं चलता कि इसमें कोई गड़बड़ हो रही है । हम अपने बारे में सतर्क रहें । यदि हमारा संकल्प सत्य रहेगा तो सत्य संकल्प का दाता भगवान होता है । और फिर यह जो पांचवा फैक्टर है "दैवं चैवात्र पंचमम्" वह निश्चित रूप से अनुकूल रहेगा । भगवान का आशीर्वाद रहता है यह बात निश्चित हैं ।

हमारी चेष्टायें और हमारे साधन कैसे हों, उसके चार मानक है ।

अधिष्ठानं तथा कर्ता करणं च पृथग्विधम् ।

विविधाश्च पृथक्चेष्टा दैवं चेवात्र पंचमम् ॥

इसका थोड़ा मतलब समझ लें । अधिष्ठान के बारे में बाद में बोले, तथा कर्ता माने कार्यकर्ता । "करणं च पृथग्विधम्" करणं का मतलब होता है उपकरण, साधना यह जो अपना काम है । साधन क्या है? कार्यालय, पत्रव्यवहार और गेट मीटिंग आदि जो सारे साधन लगते हैं उसको करण कहा गया है। करणं च पृथग्विधम् विविध प्रकार के जो साधन हैं अखबार की ओर अप्रोच (Approach) करना है, लिखा पढ़ी करना है, प्रवास करना है, तो टिकट गाड़ी का या जीप का हो, ऐसे अनेक साधन हैं जो मिलकर करणं च पृथग्विधम् बनते हैं । और फिर कहा, विविधाश्च पृथक्चेष्टा । चेष्टा का तात्पर्य है किसी कार्य की गतिविधियां । पृथक का अर्थ है अलग-अलग विधि अर्थात् तरह-तरह की गतिविधियां जो हम नित्य कर ही रहे हैं । कहीं भाषण देते हैं । कहीं द्वार सभायें करते हैं, कहीं इण्डस्ट्रियल ट्रिब्यूनल के सामने जाते हैं, कहीं झगड़े करते हैं या जो तरह-तरह की गतिविधियां हैं हम सब करते हैं यह सारी गतिविधियां विविधाश्च पृथक्चेष्टा है । चारों फैक्टर्स का विचार यदि ठीक ढंग से हुआ तो फिर यशस्विता प्राप्त होती है । इसमें हम लोगों के सोचने का ढंग और अन्य लोगों के सोचने के ढंग में बहुत अन्तर है । अन्य लोग जो जरा बुद्धिमान, समझदार व चतुर हैं उनके और हमारे सोचने में अन्तर है कारण कि हम व्यवहार चतुर लोग नहीं हैं बल्कि पागल हैं । लेकिन जो व्यवहार चतुर हैं उनके विचार से करणं च पृथग्विधम अर्थात् तरह-तरह के साधन जितनी विपुल मात्रा में उपलब्ध होंगे, उतना ही काम आसान और यशस्वी होगा । हम भी चाहते हैं कि आवश्यक सारे साधन अपने पास हो, लेकिन साधनों के विषय में चतुर व बुद्धिमान लोगों की धारणा और हमारी धारणा में अन्तर है । चतुर लोग सोचते हैं कि किसी भी काम की

यशस्विता साधनों की विपुलता पर अवलम्बित है । अधिक पैसा और कई बिल्डिंग संस्थान के पास हो, स्थान-स्थान पर कार्यालय खड़े हों, अनेक पूर्णकालीन कार्यकर्ता या कर्मचारी भी हों किन्तु आप ऐसे जो ध्येयवादी लोग हैं, हो सकता है कि कुछ लोगों को कुछ मानधन मिलता होगा, वह कोई Salary नहीं हैं, मानधन Honorarium है, किन्तु जो पेटार्थी हैं, ध्येयवादी नहीं हैं, सरकारी कार्यालयों की भांति काम करता हो आई० एन० टी० यू० सी० के दफ्तर में काम कर रहा हो और यह सोचता हो कि बाल-बच्चों का पालन पोषण करना है । इस तरह के जो लोग हैं ऐसे लोगों के कई समूह भी खड़े होंगे, कई बिल्डिगें खड़ी होंगी, बड़े-बड़े कार्यालय खड़े होंगे, नेताओं के दौरे के लिए मोटर कारें खड़ी होंगी । वायुयान भी खरीद लिया कि नेताजी को दौरा करना है तो अपने ही वायुयान से क्यों न करें । इस तरह से कुछ लोग सोचते हैं कि साधन की विपुलता हो गयी तो कार्य जल्दी होगा । हमारा ऐसा विचार नहीं है । भगवान ने कहा करणं च पृथग्विधम् यह बात ठीक है लेकिन उसमें कुछ सन्तुलन भी होना चाहिए । अन्यान्य लोगों के अनुभव के आधार पर हम लोगों ने निष्कर्ष निकाला कि साधन चाहिए, किन्तु साधन की विपुलता होने से बाधा भी आती है । साधनों का अभाव होने के कारण जहां बाधा आती है वहीं विपुलता के कारण भी । कभी-कभी ऐसा लगता है कि यदि थोड़ा सा साधन और होता तो अधिवेशन और अच्छा होता । यह हो सकता है कि साधनों के अभाव के कारण कुछ कष्ट हुआ होगा । लेकिन यदि साधनों का प्रभाव रहा, विपुलता रही, प्रचुरता रही तो फिर काम के बचने की आशा ही नहीं है । काम खत्म हो जायेगा ।

साधनों के बारे में कुछ Optimum point हैं । Optimum point एक ऐसा बिन्दु है कि कम साधन होने से भी हानि होती है । कम साधन सामग्री रहने से जो हानि होती है वह सीमित है । अधिक साधन सामग्री रहने से जो हानि होती है वह असीम एवं अमर्यादित होती है । इसलिए हम लोगों ने कहा-पैसा है, सम्पत्ति है, प्रसिद्धि है, यह बारिश के समान है । बारिश के बारे में ऐसा है कि बारिश का एक Optimum point है । इतनी बारिश हो गयी तो फसल अच्छी होगी, उससे कम बारिश हुई तो फसल कम अच्छी होगी । बारिश उससे भी कम हुई तो अकाल आयेगा । और वह अकाल सूखा रहता है । माने Optimum point से कम बारिश होती है तो सूखा पड़ता है । लेकिन बहुत बारिश होने से गीला अकाल आता है । फसल खराब हो जाती है और सड़ जाती है । और व्यवहार में ऐसा दिखाई देता है कि ऑप्टिमम् प्वाइन्ट से अधिक मात्रा में जहां

साधन हो जाते हैं, पैसा हो जाता है, सम्पति हो जाती है वहां लोगों की मन: स्थिति में परिवर्तन आता है । अच्छे-अच्छे ध्येयवादी लोग भी माया मछिन्द्र बन जाते हैं । सम्पत्ति की सुविधाओं के कारण वे आराम व ऐश के अभ्यस्त हो जाते हैं उनकी मन: स्थिति में परिवर्तन होता है । तब जो मन: स्थिति बनती है कार्यकर्ता वाली नहीं रहती । केवल कर्मचारी वाली मन: स्थिति हो जाती है नेतागीरी की मन: स्थिति बन जाती है । इसलिए यदि अच्छे कार्यकर्ताओं को बिगाड़ना है तो उनको अधिक साधन दीजिए, अधिक पैसा दीजिए, फिर आपको चिन्ता करने की आवश्यकता नहीं वह स्वयं नीचे जायेगा उसको एक बार अधिक पैसा व साधन दीजिये फिर उसको नीचे लाने के लिए आपको कोई काम करने की आवश्यकता नहीं । वह अपने को स्वयं नीचे लाने का काम करेगा, ऐसा अनुभव में आया है । जहां चारों ओर यह चर्चा है कि जितनी सम्पत्ति बढेगी, कार्यालय की बिल्डिंग बढेगी उतनी ही मात्रा में काम बढ़ेगा । उसके विपरीत हमारे यहां सर्कुलर निकला है कि नई सम्पत्ति बनाना नहीं है ।

बिल्डिंग खरीदना नहीं और यदि काम के लिए ऐसा अपरिहार्य लगता है कि कार्यालय के लिए कोई जमीन खरीदनी है, बिल्डिंग बनानी है तो पहले केन्द्र से आज्ञा लेनी चाहिऐ पर केन्द्र भी जल्दी आज्ञा देने वाला नहीं है अधिक खतरा मोल लेना पागलपन की बात है। आज चारों ओर वायुमंडल यही है, संख्या बढ़ानी है तो फिर कार्यालय की अच्छी बिल्डिंग होनी चाहिए अब इसमें खराबी तो कुछ नहीं लगती लेकिन हम लोगों ने इस पर कितने प्रतिबन्ध लगाये हैं देखिये एक ने कहा कि अगर कोई जमीन मिलती है तो उसे ले लिया जाय कहीं बिल्डिंग खड़ी हो सकती है तो उसको खड़ा कर लिया जाय । व्यवहार चतुर लोग हम लोगों से कहते हैं कि आप जानते नहीं, आप तो दिल्ली में बैठे हैं, आपको हमारे यहां का पता नहीं । वे इसका कई प्रकार से स्पष्टीकरण देते हैं । कहते हैं कि कई बार ऐसा होता है कि कोई जमीन या बिल्डिंग को बेचने के लिए कहता है और अभी-अभी खरीदेगे तो वह मिल जायेगी । और यदि हम कार्यालय को लिखेगें और केन्द्रीय कार्यालय से कोई आयेगा वह हमको अनुमति देगा या नहीं देगा तब तक कोई दूसरा बिल्डिंग खरीद लेगा। या फिर कोई जमीन जो खरीदने के लिए आज है और मान लीजिये कि पचास हजार रूपये में मिलती है ओर केन्द्रीय कार्यालय से यह सारा पत्र व्यवहार करेगें तो देर हो जायेगी । तब तक पचास हजार की जमीन पांच लाख कीमत की हो जायेगी । ऐसी स्थिति में हमारे प्रतिबन्ध के कारण पचास हजार की जमीन पांच लाख

में खरीदनी पड़ेगी । यह भी देखना पड़ता है । यह भी हो सकता है कि जो बिल्डिंग हम खरीदना चाहते हैं वह हाथ से निकल जाये । इसके लिए वे बताते हैं कि वह बहुत मौके की जगह है । यहां रहने से सब लोगों के आने-जाने में बहुत सुविधा होती है । पर यदि दिल्ली लिखेंगे और जब दिल्ली से कोई आयेगा तब तक यह मौके की जगह हाथ से निकल जायेगी । यह सारे खतरे मोल लेते हुए भी प्रतिबन्ध रखे गये कि केन्द्र की जब तक अनुमति नहीं तब तक जमीन खरीदना नहीं है, बिल्डिंग बनाना नहीं है, बिल्डिंग के लिए पैसा जुटा सकते हैं तो भी बनाना नहीं है और केन्द्र भी जब इजाजत देगा तो यह सब देखकर देगा । एक जगह किराये से उन्होंने दफ्तर की जगह ली । किराया बहुत ज्यादा था । फिर भी हमने कहा कि मैं सब जानता हू कि किराये के नाम पर इतना ज्यादा पैसा देना पड़ेगा कि जितने से अपनी बिल्डिंग हो जायेगी । यह मूर्खता की बात होते हुए भी अपनी बिल्डिंग नहीं बनाना है । किराये के मकान में रहना है । तीन साल तक उन लोगों को हमने रोक दिया । बाद में आवश्यकता की वजह से कुछ जमीन खरीदने की आज्ञा दी गई । मैं समझता हूँ कि इतनी मूर्खता की बात शायद ही हिन्दुस्तान में किसी संस्था में चलती होगी । लेकिन हम लोग कर रहे हैं । क्योंकि हमारा सदा का अनुभव ऐसा है कि अभाव के कारण जितना नुकसान होता है उससे कई गुना अधिक नुकसान साधन सामग्री के प्रभाव के कारण होता है । कोई वस्तु अपने पास नहीं है तो हम जैसे-तैसे जुटा लेते हैं, कष्ट भी होता है । लाउड-स्पीकर की आवश्यकता है, जो अपने पास नहीं है, उधार लेते हैं, कर्जा लेते हैं, कर्जा उतारने में भी बड़ा कष्ट है । किन्तु यदि प्रभाव ज्यादा हो जायेगा तो उसके कारण कार्यकर्ता की मनस्थिति ही बदल जाती है । मैं यह केवल कार्यकर्ताओं के बारे में नहीं कह रहा हूँ । मैं अपने लिए भी बोल रहा हूँ कि अगर आप लोगों ने हमें अधिक सुविधायें दी तो हमारी मनस्थिति बदल सकती है । हम भी माया मछिन्दर नाथ हो सकते हैं । इस दृष्टि से "करणं च पृथग्विधम्" अर्थात् सभी तरह के साधन चाहिये । मैं जानता हूँ कि आज हमारे पास साधन सामग्री कम है । कोई चिन्ता की बात नहीं । जैसे काम बढ़ता जाएगा तो हम साधन जुटायेंगे । तो करणं च पृथग्विधम् के बारे में हमारी यह भूमिका है । हम साधन सामग्री को जैसे अन्य लोग महत्व देते हैं वैसा महत्व नहीं देते हैं । हम महत्व देते हैं अधिष्ठानम् को । यह सबसे महत्वपूर्ण बात है । अधिष्ठान जितना अच्छा रहेगा कार्य उतना ही सफल होगा । अब अधिष्ठान शब्द का स्पष्टीकरण करना बहुत कठिन है । किसी भी कार्य का आधारभूत

विचार या विचारधारा अधिष्ठान है । यह तो समझ में आने वाली बात है । लेकिन अधिष्ठान का पूरा अर्थ यह है कि जो विचार या विचारधारा कार्य के आधारभूत रूप में है, कार्य की नींव के रूप में है, यह जो कार्य की बिल्डिंग है उसके कलश तक, माने नींव से लेकर कलश तक, सम्पूर्ण कार्य में जो विचार या विचारधारा ओतप्रोत है उसको अधिष्ठान कहा जाता है । आजकल हम लोग अंग्रेजी के आधार पर ही विचार करते हैं । अंग्रेजी में इसकी धारणा ही नहीं है । इसके कारण अंग्रेजी में इसके समकक्ष कोई भी शब्द नहीं है । अब अपनी भी मुश्किल होती है । क्योंकि जो शब्द उपलब्ध है उसी का प्रयोग करते हैं । प्रत्येक समय तो हम यह नहीं कह सकते कि अधिष्ठान का इतना बड़ा और अलग अर्थ होता है, कि कार्य के नींव के रूप में और नींव ही नहीं तो नींव से लेकर कलश तक जितना कार्य है, सम्पूर्ण कार्य में भरा हुआ ओत-प्रोत जो तत्व है, वह तत्व माने अधिष्ठान है । अंग्रेजी के आइडोलोजी शब्द से पूरा अर्थ वास्तव में हो नहीं सकता । लेकिन आपकी जानकारी के लिए मेने कहा कि यह आइडोलोजी शब्द है, शेष शब्द भी हैं, पूरी भाषा के शब्द बदलते जाते हैं । इसलिए उनका आधार लेना कठिन हो जाता है । लेकिन आइडोलोजी हम व्यवहार के लिए चलाते हैं । क्योंकि इन सबका प्रत्येक समय स्पष्टीकरण देना तो सम्भव नहीं होता । आपको आश्चर्य होगा कि आइडोलोजी शब्द का अर्थ जो आज है वह पहले नहीं था । कभी-कभी शब्द के चक्कर में हम आ जाते हैं । आइडोलोजी शब्द का प्रयोग प्रारम्भ में तुच्छता पूर्वक किया गया था इसका पहला प्रयोग नेपोलियन ने किया और कहा कि ये आइडोलोजीकल लोग हैं, ऐसा नेपोलियन ने विचारकों के लिए कहा । नेपोलियन बादशाह बनना चाहता था और उसके बादशाह बनने के विरोध में जो विचारक थे, उनके लिए उसने तुच्छता पूर्वक कहा कि वे व्यवहार जानते नहीं हैं । नेपोलियन ने कहा कि ये तो आइडोलोजीकल लोग हैं, हवा में छलाँग लगाने वाले लोग हैं, धरती के साथ इनका कोई सम्बन्ध नहीं है । इस तरह पहली बार तुच्छता पूर्वक इस शब्द का प्रयोग नेपोलियन ने किया । बाद में होते-होते जब मार्क्स आये । मार्क्स ने एक सुसूत्र रचना की । एक इज्म (वाद) उन्होंने स्थापित किया तो आइडोलोजी का आइडेंटीफिकेशन उसकी एकरूपता मार्क्सवाद के साथ हुई । कई दशकों तक यह चला कि - आइडोलोजी माने मार्क्सवाद । मार्क्सवाद माने आइडोलोजी । आइडोलोजी का मार्क्सवाद छोड़कर दूसरा कोई अर्थ नहीं, यह अवस्था कुछ दशकों तक रही । लेकिन बाद में और भी मार्क्सवाद की स्पर्धा करने वाले, ऐसे

कुछ विचार प्रवाह आये । उन्होंने भी आइडोलोजी कहा । तो कुल मिलाकर जो विचारधारा होती है, उसको आइडोलोजी कहना यह पद्धति प्रारम्भ हो गई । यह जो प्रचलित अर्थ है उस प्रचलित अर्थ में हम आइडोलोजी शब्द का प्रयोग करते हैं । लेकिन भगवान ने जो अधिष्ठानम् शब्द कहा उसका अर्थ बहुत विस्तृत है और आइडोलोजी शब्द का अर्थ तो फिसलने वाला है । कब बदल जायेगा पता नहीं और दूसरा बड़ा सीमित है । इसलिए इस दृष्टि से अधिष्ठानम् शब्द का अर्थ मूलरूप में समझ लेना चाहिए । वह केवल आइडोलोजी नहीं है । यद्यपि हम जब बात करते हैं तो इतना ही कहना पड़ता है कि हमारी आइडोलोजी यह है । काम चलता है व्यवहार में आइडोलोजी शब्द का प्रयोग कर लेते हैं । लेकिन मूल में यह है कि वह तत्व जो नींव के रूप में है सम्पूर्ण कार्य में नींव से लेकर कलश तक ओतप्रोत भरा हुआ है । उसको अधिष्ठान कहा गया है । और इस दृष्टि से अपना जो अधिष्ठान है उसके विषय में सब लोग जानते हैं । इसका वर्णन मैं नहीं करूँगा ।

केवल भौतिकता के आधार पर ट्रेड यूनियन चलायी जा सकती है क्या? लेकिन इसके विषय में जो भी हमारा अधिष्ठान है, प्राचीन संस्कृति, अपना धर्म, उसके आधार पर इसके विषय में बाहर के लोगो के मन में तरह-तरह की आशंकाएँ रही है । और आशंका रखने वाले लोग प्रमुख रूप से कम्युनिष्ट हैं तथा कम्युनिष्ट प्रभावित गैर कम्युनिष्ट हैं । ऐसे लोगों ने हमारे अधिष्ठान के बारे में अपने मन में कुछ सन्देह रखा । उदाहरण के लिए आपको जरूर किसी ने कभी कहा होगा कि हम ट्रेड यूनियन का काम कर रहे हैं, हमारा काम तो इतना ही है कि ज्यादा से ज्यादा पैसा मजदूरों को प्राप्त करा देना । आपका भारतीय मजदूर संघ यह कार्य कर भी रहा है । अब ज्यादा से ज्यादा आर्थिक लाभ, भौतिक लाभ यह यदि अपना काम है तो बीच में यह नारा लगाया कि "बी० एम० एस० की क्या पहिचान? त्याग, तपस्या और बलिदान ।" अरे यहाँ त्याग तपस्या का क्या झंझट है । यहाँ तो बोनस दिला दो, मंहगाई भत्ता बढ़वा दो, हमारी वेतन श्रेणियाँ बढ़वा दो यह काम है । यह त्याग, तपस्या किसलिए बीच में आती है । तो जरूर आपसे किसी न किसी ने पूछा होगा । वैसे तो हम जानते हैं कि प्रारम्भ से ही यह कहा गया है कि भारतीय मजदूर संघ इसलिए निकला है कि मजदूरों का सुख बढे और मजदूर कार्यकर्ताओं का दुःख बढे, परेशानियां बढे, कष्ट बढे । हम मजदूरों को सुखी करना चाहते हैं । और मजदूर कार्यकर्ताओं को दुःखी करना चाहते हैं । "The best should

suffer so that the rest may prosper” प्रारम्भ से ही कहा गया है कि यह अच्छे लोग हैं, इनको कष्टमय जीवन बिताना चाहिए । जिससे बाकी के जो सामान्य लोग हैं वह सुखद जीवन बिता सकें । यह सिद्धान्त हम लोगों ने पहले से ही कहा था । यह हमारे लिए कोई नई बात नहीं है । लेकिन जो लोग भौतिकवादी हैं वह ऐसा समझते हैं कि ट्रेड यूनियन का यह आन्दोलन केवल भौतिकवादी आन्दोलन है । भौतिक सुख सुविधायें प्राप्त करने के लिए है । यह सारा जो सुख साधन है वह प्राप्त हो, आराम प्राप्त हो इसलिए यह काम करना है । अगर इसीलिए यह काम करना है तो यह त्याग, तपस्या वाली बात क्यों आती है? यह प्रश्न 'मन' में अवश्य आता है । हमारा अधिष्ठान क्या है? यह कई बार बताया गया है । लेकिन यहाँ मैं केवल एक बात बताना चाहता हूं कि इस तरह से भौतिकवाद को लेकर ट्रेड यूनियन चलाना यह जो फैशन कम्युनिष्टों ने चलाया है वह मजदूरों के लिए उपयुक्त है क्या? यह ट्रेड यूनियन के लिए उपयुक्त है क्या? यह एक प्रश्न है । इस दृष्टि से भौतिकवाद को लेकर चलाना यदि उपयुक्त होगा तो फिर हम यह जो सारी बातें कर रहे हैं वह सभी बातें गलत होगी । विशुद्ध भौतिकवादी, विशुद्ध आर्थिकवाद का विचार लेकर चलने वाला, मजदूर, मजदूर ट्रेड यूनियनें बलवान हो सकती हैं क्या? इसके कारण मजदूरों का और मजदूर ट्रेड यूनियनों का यश बढ़ सकता है क्या? भगवान की दया है कि इसका उत्तर अभी आ गया है । हम जानते हैं कि इस समय कम्युनिष्ट क्रान्ति का पहला देश रूस है । इकहत्तर साल पहले जहाँ कम्युनिष्ट क्रान्ति हुई, जहाँ डिक्टेटरशिप प्रोटेरिएट आ गयी, ऐसा उनका दावा था । मजदूर हुकुमत आ गयी ऐसा उनका दावा था, मजदूरों की तानाशाही आयी । आज इस विवाद में जाने की आवश्यकता नहीं है कि मजदूरों की तानाशाही है अथवा मजदूरों पर पार्टी की तानाशाही है, यह सारे विवाद हम जानते हैं । लेकिन मजदूरों की हुकुमत ऐसा कहा गया वहाँ ट्रेड यूनियनों को सारे अधिकार दिये गये । हमारे देश में बाकी ट्रेड यूनियनें ऐसा मानती हैं कि कानूनन हमको मान्यता और अधिकार तथा मान्यता मिल जायेगी तो हमारी मान्यता बढ़ेगी । कानून में हमें मान्यता और अधिकार नहीं मिलेंगे तो हमारी ताकत क्या रहेगी? माने यूनियनों की ताकत, मजदूरों की ताकत, यह यूनियनों को मिलने वाली मान्यता और मिलने वाले अधिकार पर अवलम्बित है, ऐसा हमारे यहाँ सामान्यतया माना गया है । अब रूस में ट्रेड यूनियन को अधिकार दिये गये । कहाँ तक अधिकार दिये? यहाँ जो जे० सी० एम० की बात करते हैं, मान्यता की बात करते हैं,

उनको भी आश्चर्य होगा कि कानून की किताब में रूस में यूनियनों को यह अधिकार दिया है कि किसी भी मजदूर पर कोई भी Action लेना हो तो मैंनेजमेंट सीधे नहीं ले सकती, ट्रेड यूनियन से पूछ कर लेना पड़ेगा । और यदि किसी मैंनेजर ने ट्रेड यूनियन को न पूछते हुए किसी को Dismiss किया तो वह कोर्ट के पास जाता है और कोर्ट कहता है क्योंकि ट्रेड यूनियन से Management का सलाह मशविरा नहीं हुआ इसलिए यह Dismissal गलत है । उसको काम पर लेना पड़ेगा । यहां तक अधिकार उनको दिये गये हैं । क्या इसके कारण रूस की ट्रेड यूनियनें बलवान हुईं । कानून की किताब में इतने सारे अधिकार मजदूरों को देने के बाद, माने आप जिस रिकगनिशन को, मान्यता को अपनी बहुत बड़ी ताकत मानते है इससे कई गुना अधिक अधिकार रूस ने कानूनन अपने मजदूरों को दिया । लेकिन क्या इसके कारण वहां की ट्रेड यूनियनें बलवान हुई । इस समय रूस के राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का विचार और उसके विषय में चिन्तन करने वाले गोर्वाचोव ने अपना नया कार्यक्रम घोषित करने से पहले सभी क्षेत्रों का अध्ययन किया था । ट्रेड यूनियन के क्षेत्र का भी अध्ययन किया था और ट्रेड यूनियन के क्षेत्र का अध्ययन करने के पश्चात उन्होंने यह कहा कि इकहत्तर साल हो गये कम्युनिष्ट क्रान्ति को लेकिन इसके बाद भी हमारा ट्रेड यूनियन आन्दोलन दुर्बल है, कमजोर है और असमाधानकारक स्थिति में है । असन्तोषजनक स्थिति में है । ऐसा विचार उन्होंने प्रगट किया । आशय भी प्रकट किया । यह गोर्वाचोव कोई ट्रेड यूनियन नेता नहीं है । वह रूस के प्रमुख हैं । आज के रूस के प्रेसीडेन्ट हैं । उनके विचार के अनुसार फिर से रूस की पुनर्रचना होने वाली है । किन्तु चिन्तन के दौरान उन्होंने आश्चर्य प्रकट किया और दुःख भी प्रकट किया । उन्होंने ट्रेड यूनियन नेताओं को अलग-अलग भागों में बुलाकर यह कहा कि तुम को हमने कानून द्वारा इतने अधिकार दिये हैं । इन अधिकारों का उपयोग करना, मजदूरों के अधिकारों को असर्ट करना, ट्रेड यूनियनों के अधिकारों को असर्ट करना, यह तो आपने छोड़ दिया और थोड़े बहुत अपने लोगों के लिए हो या और किसी कारण हो जो Economic Manager, जो अफसर हैं, उनके सामने आप लाचारी की भूमिका लेते हो । अफसर-शाही के सामने आप चापलूसी और खुशामद की भूमिका लेते हो वास्तव में इसकी तो आवश्यकता नहीं । आप तो Assert कर सकते हो । आपको तो कानून से अधिकार मिले हैं । जो कानूनन अधिकार आपको मिले हैं उनको भी आप अमल में नहीं ला रहे हैं । यह लाचारी की भूमिका क्यों ले रहे हो? ऐसा उन्होंने कहा और ट्रेड यूनियन

नेताओं को डाँटा । इसलिए उन्होंने जो पैरास्ट्राइका नाम की पुस्तक लिखी है उसमें उन्होंने स्पष्ट कहा कि हमने सारे अधिकार दिये । पहले उन्होंने यह गिनाया कि उन्होंने कौन-कौन सा अधिकार दिया । फिर कहा Alas (हाय!) आज हमारे ट्रेड यूनियन की हालत रूस में अच्छी नहीं है । अब यह सोचने की बात है कि उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा- पार्टनरशिप विद मैनेजमेन्ट की भावना आपके अन्दर क्यों आ रही है । दूसरी बात कहा – "Trade union should have teeth" ट्रेड यूनिनय के दाँत होने चाहिए । यह रूस में जहाँ मजदूरों की हुकूमत चल रही है ऐसा हम सुनते हैं, वहाँ की बात है । वहाँ के हैड ऑफ दी स्टेट यह कह रहे हैं । सारे अधिकार जिसका इकहत्तर साल तक मजदूरों ने उपभोग किया है, उनकी ऐसी स्थिति है । गोर्वाचोव को कहना पड़ता है – Trade union should have teeth और Partnership in management की भावना नेताओं में नहीं आनी चाहिए । माने इकहत्तर साल बाद वहा के राष्ट्र निर्माण के बारे में सोचने वाला व्यक्ति वह वहाँ की ट्रेड- यूनियन का निरीक्षण करते हुए यह देखता है कि सारे अधिकारों के बावजूद नेताओं में लाचारी की, चापलूसी की, खुशामद की भावना आ गई है । तो उनको स्पष्ट कहना पड़ता है कि इसको छोड़ दीजिए । ट्रेड युनियन को स्वतन्त्र रूप से चलने दीजिए । निर्भयता से चलाइये । यह रूस का हेड आफ दि स्टेट (राज्य प्रमुख) कहता है । तो यह जो विशुद्ध भौतिकवाद है। यही जिनकी प्रेरणा है, इस प्रेरणा को लेकर काम करने वाले जो लोग है, यह लोग ट्रेड यूनियन चलायेंगे तो ट्रेड यूनियन की क्वालिटी क्या होगी? यह रूस में इकहत्तर साल बाद गोर्वाचोव ने जो प्रमाण पर दिया है, उस प्रमाण पत्र से हम देख सकते हैं, मैंने कहा कि हमारा अधिष्ठान क्या है? सिद्धान्त क्या है? उसकी गहराई में हम जाना नहीं चाहते । लेकिन यह जो हमारे मन में कभी-कभी सन्देह होता है कि ,शुद्ध भौतिकवाद छोड़कर विशुद्ध आर्थिकवाद को छोड़कर हम त्याग, तपस्या, बलिदान, धर्म, संस्कृति और राष्ट्रीयता यह जो सारी बातें कर रहे हैं क्या हम सही हैं या कम्युनिष्ट सही हैं । तो रूस का यह ट्रेड युनियन का अनुभव यदि हम ध्यान में लेते हैं तो बाकी लोगों ने हमारे 'इस त्याग, तपस्या, बलिदान के बारे में और हमारे अन्य विचारों के बारे में यदि कुछ संदेह प्रकट किया होगा तो उसके कारण अब मन विचलित करने की बिल्कुल आवश्यकता नहीं है । मैंने पाजिटिभली नही रखा है कि हमारा अधिष्ठान क्या है? लेकिन उसके बारे में मन में जो सन्देह आ सकते हैं, उसी की केवल चर्चा की है । हम जानते हैं कि हमारा अधिष्ठान अच्छा है । साधन के बारे में

पृथक चेष्टा कर रहे हैं और भी करने वाले हैं । तरह-तरह की एक्टिविटीज है, द्वार सभायें, पर्चियाँ हैं, पोस्टर हैं, निगोसिएशन हैं, ट्रिब्यूनल्स हैं ।

सब काम जो हम करते हैं विविधाश्च पृथक चेष्टा यह सारे काम हमारे अच्छे ढंग से हों या अच्छे ढंग से होंगे, ठीक ढंग से होंगे, यह किस पर अवलम्बित होगा ? अधिष्ठान पर तथा कर्ता । 'कर्ता' यह महत्व की बात है । कर्ता माने हम । हम कार्यकर्ता हैं । हमें विविधाश्च पृथकचेष्टा चलाना है । तरह-तरह की एक्टिविटीज चलाना है । वह एक्टिविटीज सही दिशा में रहे, ठीक ढंग की रहे, यह हमारे ऊपर अवलम्बित है । कार्य और कार्यकर्ता इसमें एक अटूट सम्बन्ध हुआ करता है । अनिवार्य सम्बन्ध हुआ करता है । माननीय एकनाथ जी ऐसा कहते थे कि कार्य और कार्यकर्ता इसका सम्बन्ध इतना अनिवार्य है कि मैं यदि किसी कार्यकर्ता को देख लेता हूँ और वह कार्यकर्ता कैसा है उसके स्वभाव गुण दोष को पूरी तरह समझ लेता हूँ तो फिर उसके कार्य क्षेत्र में जाना मेरे लिए आवश्यक नहीं है । उसके कार्यक्षेत्र का दर्शन न करते हुए भी मैं आपको बिल्कुल बता सकूँगा कि उसके कार्यक्षेत्र में गुण क्या होंगे? दोष क्या होंगे? उसके कार्यक्षेत्र का स्वरूप क्या होगा और वैसे ही वह कहते थे कि यदि मैंने कार्यकर्ता का मुँह भी देखा नहीं, उसके बारे में मुझे जानकारी नहीं, लेकिन उसके कार्यक्षेत्र का यदि मैंने अध्ययन कर लिया है कि कार्यक्षेत्र कैसा है? कार्यक्षेत्र के दोष क्या हैं? अवगुण क्या हैं? अच्छाई क्या? तो फिर इसकी आवश्यकता नहीं है कि फिर मैं कार्यकर्ता को देखूँ । कार्यक्षेत्र का मैंने पूरा अध्ययन कर लिया तो कार्यकर्ता का स्वरूप क्या होगा? उसके गुण-दोष क्या होंगे? वह में कार्यकर्ता का दर्शन न करते हुए भी बराबर बता सकता हूँ । इतना अनिवार्य सम्बन्ध कार्यकर्ता और कार्यक्षेत्र में रहता है, ऐसा माननीय एकनाथ जी रानाडे कहते थे । तो यह जो हमारी विविधाश्च पृथकचेष्टा है, यह जो हमारी एक्टिविटीज हैं वह ठीक ढंग से चलेगी अथवा नहीं, यह इस पर निर्भर है कि कार्यकर्ता कैसा है? तो हम कार्यकर्ता के नाते स्वयँ अपने को अच्छा रखें । कार्यकर्ता के सभी गुण अपने अन्दर आने के बाद भी एक बात बड़े महत्व की है कि यशस्वी कार्य कौन कर सकता है? इसके विषय में कहा गया है कि कोई भी काम करते समय जिसकी मनस्थिति शान्त है, सन्तुलित है, संयमित है, वह यशस्वी होता है । परिस्थितियाँ अलग-अलग ढंग की हो सकती हैं । बहुत विपरीत हो सकती हैं । बहुत विरोधी हो सकती हैं । बहुत

प्रतिकूल भी हो सकती हैं । शायद हमें पीछे हटना पड़े ऐसी भी परिस्थिति हो सकती है । किन्तु यश की स्थिति में, अपयश की स्थिति में, दोनों में जिनका मन स्थिर रहता है, शान्त रहता है, सन्तुलित रहता है, ऐसा नहीं कि थोड़ी सी पराजय हो गई तो अरे बाप रे मर गया, कह कर बैठ गये । ऐसा नहीं तो यश की स्थिति में, अपयश की स्थिति में, सुख की स्थिति में, दु:ख की स्थिति में,हमेशा जिसका मन सन्तुलित रहता वह कार्यकर्त्ता है । लेकिन मन को सन्तुलित रखना बहुत कठिन काम है । यह यशास्थिति के लिए बहुत आवश्यक है । इसलिए जब भगवान ने अर्जुन से कहा कि तुमको लड़ना है । तुम नहीं लड़ोगे तो पाप लगेगा ।

उन्होंने कहा कि -

“अथ चेत्वामिमं धर्म्य संग्रामं न करिष्यसि ।

तत: स्वधर्म कीर्ति च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥“

यह धर्म संग्राम है । धर्म में बताया हुआ युद्ध है । यह नहीं करोगे तो तुमको पाप लगेगा । भगवान श्रीकृष्ण ने अर्जुन को समझाते हुए पुन: कहा कि -

“सुख दु:खे समे कृत्वा, लाभालाभो जया जयो ।

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥“

किस तरह लड़ोगे? “सुख दु:खे समे कृत्वा ।“ थोड़ी विजय की प्राप्ति हुई तो आनन्द हुआ, पराजय हुआ तो एक दम दु:ख हुआ, ऐसा नहीं । लाभालाभो, लाभ और हानि दोनो ही अवस्था में मन स्थिर है, ज्यों-ज्यों, जय और पराजय दोनों अवस्था में मन स्थिर है, ततो युद्धाय इसलिए युद्ध करना है । अर्थात् War for its own sake इस भावना को लेकर युद्ध करना है । उन्होंने आगे कहा कि - “कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषुकदाचन्”, कर्म करना तुम्हारा अधिकार है, उसका फल क्या होता है, अच्छा होता है या बुरा यह देखने की आवश्यकता नहीं है । हम कर्म करते ही जायेंगे। अन्ततोगत्वा हम को जहाँ पहुंचना हैं, जरूर पहुंचेगे । इसलिए मन की स्थिरता आवश्यक है । बहुत बार हम देखते हैं कि कार्यकर्ता है, अच्छे गुण हैं, विद्वान है, बहुत भाग-दौड़ करता है। बहुत ध्येयवादी है, लेकिन यह जो मन की स्थिरता है, वह नहीं है । यह स्थिरता सभी

अच्छे बुरे प्रसंगों में से रास्ता निकालने के लिए बहुत आवश्यक है । हमको यह समझना चाहिए कि कार्य करना ही आनन्द है । Work is its own reward हम कार्य कर रहे हैं, यही हमारा Reward है । यही हमारा पारितोषिक है । उसका फल क्या होगा यह भगवान देख लेगा । कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन । बाकी चिंता जो करनी है वह भगवान को करनी है । भगवान् का कार्य कर रहे है। ईश्वरीय कार्य कर रहे हैं । यह मनोवृत्ति यदि हमारे मन में स्थिर होती है तो निश्चित रूप से हम सभी परिस्थितियों पर विजय प्राप्त कर सकेंगे । हमारी मनोवृत्ति यदि विचलितता की रही तो हम अच्छा काम नहीं कर सकते । हमारे निर्णय गलत हो जायेंगे ।

मन की विचलितता के तीन प्रसुख कारण है। सर्वसाधारण रूप से मनोविज्ञान का ऐसा कहना है कि निर्णय गलत होना मन की विचलितता के कारण होता है । तीन कारण उन्होंने बताये । पहला – Past Regrets , जिसका अर्थ है कि प्रत्येक का अपना कुछ भूतकाल है । अभी तक जो जीवन व्यतीत किया है उसके कुछ अच्छे एवं कुछ खट्टे अनुभव होते हैं । कुछ लोगों ने बुराइयाँ की होंगी । कुछ हमारे हाथ से त्रुटियाँ हुई होंगी । जिन त्रुटियों के कारण कुछ नुकसान हुआ होगा, न होता तो अच्छा होता, इस तरह का एक विचार हमारे मन में आ सकता है । तो भूतकाल का जो अपना जीवन है उसके कारण कुछ त्रुटियों का विचार और कुछ जो खट्टे अनुभव आये हैं उसके कारण मन विचलित होता है, सन्तुलन बिगड़ता है । भविष्य के बारे में जो आशकाएं रहती हैं उसके कारण मन का सन्तुलन बिगड़ जाता है । भविष्य के विषय में केवल कार्यकर्ता के नाते ही नहीं अपितु पारिवारिक जीवन में भी, सर्वसाधारण मनुष्य बहुत आशंकाये करता है । वास्तव में जो आशंकायें हैं, वह कभी होती ही नहीं । लेकिन इस चिन्ता से ही हम दुबले पतले होते रहते हैं । रात को नींद नही आती । तो यह Future fear दूसरा कारण है । बुद्धिमानी का काम यही है कि दोनों बातों का ध्यान रखना । अर्थात् भूतकाल में जो हमें खट्टे अनुभव आये हैं उनको ध्यान में रखना और यदि कोई त्रुटियाँ हुई हों जिसके कारण हानि हुई हो उनका ध्यान रखना ताकि वे दुहराई न जाये । पश्चाताप का बोझ मन में रखना चाहिए । चिन्तन करना या चिन्ता करने में बहुत अन्तर है । मुझे स्मरण है कि हमारे पिता जी बहुत चिन्ता करते थे । सदैव परेशान रहते थे । कारण कि वे गरीबी से ऊपर आये थे । प्रत्येक संकट का मुकाबला करते हुए ऊपर आये थे । बाद में वे एडवोकेट बने । सारा जीवन उनका कष्टमय गया । इसके कारण उनको चिन्ता करने

की आदत बन गयी थी । जीवन के अन्तिम चरण में उन्हे पैसे आदि का अभाव नहीं था । फिर भी उनको चिन्ता रहती थी । एक बार हमारे दूसरे रिश्तेदार जो संतुलित मन के थे, उनके ऊपर बहुत आपत्तियां थीं, साठ-सत्तर हजार का कर्जा था लेकिन वो आराम से सोते थे । हर दिन सुबह हलवा आदि प्रसन्नता में खाते थे । जबकि पिता जी ऐसा नहीं करते थे । उनकी तो हमेशा चिन्ता करने और हड़बड़ में रहने की आदत बन गयी थी । मैंने उनसे पूछा "बापू जी हमारे पिताजी बड़ी चिन्ता में रहते है । रात भर उनको नींद नहीं आती है और आपकी स्थिति तो बहुत खराब है, साठ- सत्तर हजार रुपया कर्जा है, पर रात में अच्छा सोते हैं, सुबह हलवा भी खाते है, यह अन्तर क्यों?" तो उन्होंने कहा "तुम अपने बाप से पूछो ? उनको रात भर नींद नहीं आती तो क्या वे सोच विचार करते रहते है। कोई आदमी लम्बे समय तक इतनी एकाग्रता के साथ सोच विचार नहीं कर सकता है । वह तो व्यर्थ ही चिन्ता करता रहता है । क्या होगा ? कैसे होगा? इसी मन्त्र का रात भर जाप करने के कारण, चिन्ता होने के कारण नींद नहीं आती है ।" वह दोनों बराबर की आयु के थे इसलिए ऐसा प्रेमयुक्त सम्भाषण चलता था । मैंने पूछा "बापू जी आप क्या करते है?" तो बोले "मैं जब विस्तार पर लेटता हूं तो घड़ी देखकर विचार कर लेता हूँ कि जितनी भी समस्याएं हैं उनके बारे में दस बजे तक, ग्यारह बजे तक सोच विचार करना है । एकाग्रता के साथ सोच विचार करता हूं । मेरी आर्थिक हालत बहुत खराब है । जब मैं दम बजकर उनसठ मिनट पर इसी निष्कर्ष पर पहुंचता हूँ कि उनका कोई समाधान नहीं है । कोई रास्ता नहीं है तो बाद के एक मिनट में अपने मन को समझाता हूँ कि समस्यायें बड़ी कठिन हैं, लेकिन उनमें से कोई रास्ता नहीं, रात भर जागरण करने से भी कोई लाभ नहीं, इसलिए सोया जाय और आराम से ग्यारह बजे सो जाता हूं और छ: बजे उठ जाता हूँ ।" तो चिन्ता और चिन्तन में बड़ा अन्तर है । भविष्य के विषय में अधिक विचार करने की आवश्यकता नहीं है ।

और फिर तीसरी बात है वर्तमान काल के बारे में टेंशन । क्या करना है? क्या नहीं करना है? टेंशन की आवश्यकता नहीं । भगवान ने जो आदेश दिया है वह प्रत्येक कार्यकर्ता को अपने हृदय में रखना चाहिये । भगवान कृष्ण ने कहा "काम करो, लड़ाई करो" उन्होंने बड़ा अच्छा शब्द प्रयोग किया और कहा "युद्धस्व विगत: ज्वर:" ज्वर का मतलब होता है टेंशन (तनाव), लड़ाई लड़ें, किन्तु मन में तनाव रखकर नहीं । कोई तनाव

Tension मन पर न रखतें हुए परिस्थिति का विचार करना चाहिए । तो यह जो भूत और और भविष्य काल के विषय में, विचार है वह बिना तनाव, (Without Tension) है । भगवान कृष्ण ने इसी लिए कहा" सुख दुःखे समे कृत्वा लाभा लाभौ जया जयौ" इस तरह की मन की स्थिरता होनी चाहिए ।

हमारा कार्य भगवान का कार्य है और यह स्थिरता तभी प्राप्त हो सकती है जब कार्यकर्ता के मन में पूर्ण श्रद्धा होती है । यह हमारा कार्य, वास्तव में श्रेष्ट कार्य है । यह भगवान का कार्य है । ईश्वरीय कार्य है । यदि असफल होगा तो प्रतिष्ठा भगवान की जायेगी, हमारा कुछ जाने वाला नहीं है हम तो छोटे आदमी हैं । इतनी आत्म समर्पित बुद्धि यदि हमारे मन में आती है तो चित्त में स्थिरता होगी । तथा प्रत्येक परिस्थितियों में कितने ही संकट क्यों न हों हम स्थिर बुद्धि होकर काम कर सकते हैं ।

अधिष्ठानम् तथा कर्ता, करणं च पृथग्विधम्।

विविधाश्च पृथक्चेष्टा........... .का कार्यकर्ता जब होगा तभी ऐसी मन: स्थिति होगी । तब सभी प्रकार की गतिविधियों का संचालन हम ठीक ढंग से कर सकते हैं । जहां पांचों बातें होगी वहां सभी कार्य यशस्वी होंगे । कर्ता के नाते अपनी जो जिम्मेदारी है उसको समझकर हम अपना व्यवहार करें । सफलता निश्चित रूप से मिलेगी ।

संगठन और संघर्ष तथा संघर्ष और संगठन

भारतीय मजदूर संघ राष्ट्र हित, उद्योग हित एवं मजदूर हित में काम कर रहा हैं । हम संघर्ष करते हैं ताकि मजदूरों को न्याय मिल सके । किन्तु अन्य लोगों द्वारा किए गये संघर्ष में और हमारे संघर्ष में अन्तर है । संघर्ष करने से पहले हम कुछ संगठन खड़ा करते हैं, तत्पश्चात् उसके माध्यम से संघर्ष करते हैं । संघर्ष में जो कुछ लाभा-लाभ होता है उसके आधार पर आगे और संगठन बढ़ाते हैं ताकि बढ़े हुए संगठन के माध्यम से हम और अधिक संघर्ष कर सकें । किन्तु संगठन, और संघर्ष राष्ट्र निर्माण के लिए अर्थात् हमारी Line of thinking "संगठन-संघर्ष तथा संघर्ष-संगठन" की हैं । संघर्ष के लिए संघर्ष ऐसा नही हैं । हम संघर्ष कर रहे हैं आप सब जानते हैं । केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों के इतिहास में इस समय एक अनोखा संघर्ष चल रहा है, जिसमें ५०% से अधिक सफलता प्राप्त हुई है । शेष सफलता भी प्राप्त होगी, ऐसा हमें विश्वास है । स्वराज्य प्राप्ति के बाद केन्द्रीय सरकारी कर्मचारियों के इतिहास में ऐसा अनोखा और इतनी सफलता प्राप्त करने वाला संघर्ष हम लोगों ने अभी किया है । आप लोगों को पता है कि दूर संचार तकनीशियनों का जो संघर्ष चला, उसमें भी उद्देश्य यही रखा गया कि पहले कुछ संगठन खड़ा किया जाये इसके बाद एक लम्बा संघर्ष । ऐसा संघर्ष चला कि सरकार को झुकना पड़ा और लोगों को काम पर लेना पड़ा । इन सब परिस्थितियों का लाभ उठाकर , संगठन बढ़ाने के लिए जहाँ पहले अपना काम नहीं था वहाँ भी सदस्यता अभियान प्रारम्भ किया गया है । स्थान-स्थान पर नये सदस्य बने हैं । यह एक प्रत्यक्ष अनुभव अभी निकट का हमारे सामने है । तो संघर्ष का उद्देश्य संगठन है । उसी के लिए संघर्ष किया गया । संगठन के लिए रचनात्मक कार्य भाषण और लेखन है । जो कुछ है संगठन के लिए । इस प्रकार प्रबल संगठन खड़ा करने का उद्देश्य लेकर भारतीय मजदूर संघ मजदूर क्षेत्र में काम कर रहा है । जैसे हम मजदूरों को शेष समाज और राष्ट्र से अलग हिस्सा नहीं मानते वैसे ही हम भारतीय मजदूर संघ को एक अलग चलने वाली संस्था नहीं मानते हैं । हिन्दुस्तान की राष्ट्र शक्ति की जो सेना है उसकी अलग-अलग टुकड़ियां, अलग-अलग मोर्चों एवं अलग-अलग विभागों पर काम कर रही हैं । लेकिन कुल मिला कर सेना एक ही है । और उसी राष्ट्र मोर्चे पर भारतीय मजदूर

संघ कार्य कर रहा है । अर्थात् हम अकेले या पृथक् नहीं हैं । अपितु हम राष्ट्र शक्ति के अंग हैं इस राष्ट्र शक्ति के निर्माण के लिए जिनका जीवन कर्तृत्व कारक हुआ ऐसे महापुरुष परम पूजनीय डाक्टर हेडगेवार जी का यह जन्म शताब्दी वर्ष है उनके जीवन से कुछ या सम्पूर्ण प्रेरणा प्रत्येक कार्यकर्ता ले सकता है । आज जो कुछ दिखाई देता है वह तो है डाक्टर जी के विचारों का unfoldment है । उनका जो विजन था, उसी Vision का यह सब unfoldment है । यह उन्मूलन है । जीवन मूल्य बदल गये लेकिन हम जानते हैं कि संगठन खड़ा करने की दृष्टि से आज की परिस्थिति अति प्रतिकूल है । केवल हमारे लिए नहीं अपितु सभी के लिए है । आज देश का जो वायुमण्डल है केवल हमारे लिए नहीं - सभी के लिए कठिन है । विघटन निर्माण करना बहुत आसान है । १९४७ के पूर्व देश के जीवन मूल्य अलग थे। "त्याग" जीवन मूल्य था । समाज के लिए कौन कितना बर्बाद होता है उसी को श्रेष्ठ माना जाता था । १९४७ के पश्चात्, नेताओं ने अपने जीवन मूल्य बदल लिए, जिसके कारण सम्पूर्ण समाज के जीवन मूल्य बदल गये । अहंकार, व्यक्तिवाद मेरा बड़प्पन, मेरा पैसा, यह सारा अहंवाद चारों और फैल गया है । इस कारण समाज में चारों ओर विभेद खड़े हो रहे हैं । कहीं जातिवाद के नाम पर तो कहीं आर्थिक विषमता के नाम पर । प्रत्येक व्यक्ति अपने को नेता मानने लगा है । अहमवादी बनना यही आज का युगधर्म है । इस कारण राष्ट्रजीवन के किसी भी क्षेत्र में संगठन खड़ा करना कठिन काम हो गया है । ऐसी परिस्थिति में हम आज काम कर रहे हैं । ऐसे दूषित वायुमण्डल से अपने को बचाना है । हम उदाहरण भी देते हैं कि जब विषैले कीटाणु वायुमण्डल में फैले रहते हैं तब अपने को और अपने परिवार को उन कीटाणुओं से बाधा न हो इसके लिए लिए विशेष सतर्कता बरतनी चाहिए । पाँच-छ: बार हमारा आपरेशन हुआ और जब हम आपरेशन थियेटर में जाते थे तो डाक्टर यह सतर्कता रखते थे कि थियेटर में किसी को जूता-चप्पल पहनकर नहीं आना चाहिये । छाता, पुस्तक आदि सभी बाहर ही रखना चाहिये । हमने जब दो तीन बार यह देखा तो डॉक्टर से पूछा "डाक्टर साहब आप आये हुए व्यक्तियों को सामान बाहर रखने के लिए क्यों कहते हैं? "उन्होंने कहा, "भाई! आपरेशन थियेटर का मामला बड़ा नाजुक होता है । कभी पेट फाड़ना होता है और कभी दिल की बाईपास सर्जरी भी होती है । यदि ऐसे समय कोई विषैला कीटाणु आपरेशन थियेटर में प्रवेश कर गया हो और बाद में घाव में प्रवेश कर जाय तब तो मरीज की हालत बिगड़ सकती है । अत: विषैले कीटाणु

आपरेशन थियेटर में न आने पावें इसलिए सतर्कता बरतनी पड़ती है और सभी वस्तुएं बाहर रखने के लिए हम कहते है । मैं समझता हूँ कि आज हमें भी सतर्कता रखने की आवश्कता है । क्योंकि बाहर के वायुमण्डल में अहमवाद, व्यक्तिवाद, गुटबन्दी, मैं बड़ा या तू बड़ा के विषैले कीटाणु हैं । देश समाप्त हो जाएगा इसकी चिन्ता उन्हें नहीं है । हम बड़े की तुम, इसी का वायुमण्डल है । ऐसी परिस्थिति में संगठन खड़ा करना बहुत कठिन है । वायुमंडल बदल जाने के कारण लोगों की सोच भी बदल गई है, जो राष्ट्र निर्माण के अनुकूल नहीं है । यह वायुमण्डल तो राष्ट्र को तोड़ने और विघटन पैदा करने वाला है ऐसे बदलते जीवन मूल्य की कठिन स्थिति में हमें काम करना है । अर्थात् प्रवाह के विरोध में तैरने का काम हमें करना है । प्रवाह के साथ तैरना आसान है किन्तु विरोध में तैरने के लिए अधिक दम-खम लगता है । यह दम-खम का काम हमें करना है। वायुमण्डल बदलने के कारण सर्वसाधारण लोगों की धारणायें और जीवन मूल्य भी बदल गये हैं । एक छोटा सा उदाहरण – जन्म शताब्दी वर्ष का जब विचार आया और चर्चा हुई तो मैं कालेज छात्रों के साथ में बैठा था । उनमें से किसी ने कहा कि डा० साहब का नाम लोग जानते नहीं हैं । अब अनायास शताब्दी के अवसर पर उनके नाम व का प्रचार करना है तो अच्छा होगा कि उनके काम का मूल्यांकन होना चाहिए । यह अनौपचारिक बात चल रही थी । मुझे कुछ पुरानी बाते स्मरण हो आयीं और कहा कि, “जब मैं कालेज में था । समाचार पत्रों में एक नाम पढ़ा था – ऐंड्रू कारनेगी (Andrew Carnegie) का जो बहुत पैसे वाले थे । उन्होंने एक फाउण्डेशन तैयार किया था । करीब दस लाख डालर उन्होंने उस फाउण्डेशन को दिया था और अधिक खर्चा आया तो वे देंगे ऐसा उन्होंने कहा । अन्वेषण का विषय था What is greatness (श्रेष्ठता क्या है) What is success (सफलता क्या है) बस यही अन्वेषण का विषय था । श्रैष्ठता क्या है? यश क्या है? श्रेष्ठ पुरुष कौन है? यशस्वी पुरुष कौन है? लोग श्रेष्ठ कैसे बनते हैं? रिसर्च करने का काम उन्होंने नेपोलियन हिल को सौंपा था । एक इण्टर मीडिएट फेल लड़के ने हमसे पूछा, “क्या आप बता सकते हैं कि यह ऐंड्रू कारनेगी (Andrew Carnegie) कौन था? मैंने उत्तर दिया, “हमें भी अधिक पता नहीं है” समाचार पत्रों में जितना छपा था उतना ही मैं जानता हूँ ।“ लड़के ने कहा “श्रेष्ठ कौन” है? यशस्वी कौन है? इसकी खोज करने के लिए दस लाख डालर खर्च करने की क्या आवश्यकता है?” मैंने कहा “क्यों?” तो उसने कहा, “ऐंड्रू कारनेगी (Andrew Carnegie) पागल आदमी था इसके लिए दस

लाख डालर खर्च करने की क्या आवश्यकता थी? यह तो अति सरल प्रश्न है । हम भी इसका उत्तर दे सकते हैं "मैंने कहा, "इसका क्या उत्तर हो सकता है?" लड़के ने कहा, बात बहुत सीधी है । जिसका नाम समाचार पत्रों में बार-बार आता है । वह अधिक श्रेष्ठ है । जिसका नाम समाचार पत्रों में कम आता है वह कम श्रेष्ठ है । जिसका नाम समाचार पत्रों में आता ही नहीं वह श्रेष्ठ पुरुष नहीं है।" ऐसा उत्तर सुनकर मैं चुप हो गया । किन्तु मस्तिष्क में यह बात गूंजती रही । चार-पांच वर्ष बाद इण्डिया टुडे में एक आर्टिकल आया था वह पढ़ने के बाद इस विचार को चालना मिली । आर्टिकल का शीर्षक था Where are they now (वे लोग अब कहां हैं)? जिनका नाम समाचार पत्रों में सदैव आता था और बाद में जिनका नाम समाचार पत्रों से लुप्त हो गया अर्थात् समाचार पत्रों ने उनका नाम छापना ही छोड़ किया । ऐसे लोगों के नाम की तालिका उस आर्टिकल में दी गई थी । ऐसे कौन लोग थे? यह बताने की आवश्यकता नहीं । क्योंकि कुछ लोग प्रात: स्मरणीय होते हैं और कुछ लोग विस्मरणीय । ऐसे विस्मरणीय लोगों की सूची वहां थी । आर्टिकल में यह भी लिखा गया था कि उस सूची में ऐसे लोगों का नाम भी सम्मिलित था किन्तु बाद में समाचार पत्रों ने इनके नाम को छोड़ दिया । यह लेख पढ़ने के बाद उस इण्टर मीडिएट फेल लड़के ने जो सरल कसौटी रखा था कि श्रेष्ठता क्या है? यशस्विता क्या है? जिसका नाम समाचार पत्रों में आएगा वह अधिक श्रेष्ठ है । तो यह कसौटी कहाँ तक ठीक है ऐसा कुछ सन्देह मेरे मन में निर्माण हुआ । समयोपरान्त कुछ ऐसी घटनाएं हुईं, जिसके कारण मेरा सन्देह और बलवान होता गया । ऐसा अनुभव आया कि जिस समय जो राज्यकर्ता रहता है उसका नाम समाचार पत्रों में प्रत्येक दिन आता है। और यदि हमने यह कसौटी रखी कि जिसका नाम समाचार पत्रों में प्रत्येक दिन आता है तो जब तक वह राज्यकर्ता है तब तक उससे श्रेष्ठ ओर कोई नही है । स्टालिन जब तक जीवित थे हमारे भारतीय कम्युनिष्ट उन्हें केवल रूस का ही श्रेष्ठ पुरुष नहीं अपितु विश्व का श्रेष्ठतम पुरुष कहते थे । जैसे हम मर्यादा पुरूषोत्तम रामचन्द्र को दुनियां का श्रेष्ठ पुरुष मानते है । माओ की चीन में वही दशा हुई । छब्बीस-सत्ताइस वर्ष तक प्रत्येक दिन माओ की जय-जयकार होती थी । आज चीन के लोग कहते हैं कि माओ श्रेष्ठ पुरुष हो सकते थे किन्तु वह देवता नहीं थे । उन्होंने अनेक गलतियाँ की, जिसके कारण हमारा बड़ा नुकसान हुआ । अब माओ की नीतियाँ छोड़कर चीन के लोग अपनी नयी नीतियाँ बना रहे हैं । अर्थात् "डिमाओजेशन" करना चाहते हैं

। क्या छब्बीस-सत्ताईस वर्ष तक माओ श्रेष्ठ पुरुष थे? और अब नीचे हो गये । यह सब देखने से ऐसा है कि श्रेष्ठता की निकष या कसौटी कुछ और ही होनी चाहिए । ऐसे अनेक उदाहरण ध्यान में आयेंगे । समकालीन प्रसिद्धि इसको यदि श्रेष्ठता की कसौटी मानते हैं तो इस दृष्टि से एक दूसरी बात का ध्यान आता है । अनेक श्रेष्ठ पुरुष हुए हैं, जिनको समकालीन प्रसिद्धि नहीं मिली किन्तु वे और उनके सिद्धान्त अस्सी वर्ष तक किसी के ध्यान नहीं आये । किन्तु उन्हें अस्सी वर्षों के बाद मान्यता मिली वह भी निगेटिव, पोप साहब ने सरकुलर प्रपत्र निकाला की कोई भी सच्चा ईसाई कोपरनिकस की पुस्तक हाथ में न ले । वह पुस्तक नहीं पढ़ी जानी चाहिए। यह प्रेसक्राइव किया गया कि उनकी पुस्तक मत पढ़ो । कोपर निकस को समकालीन प्रसिद्धि तो मिलना दूर रही अस्सी वर्ष बाद जो प्रसिद्धि मिली वह भी निगेटिव थी । जीसस क्राइस्ट का नाम सभी को पता है । आज राष्ट्र विरोधी कार्यवाही करने वाले समस्त विदेशी साम्राज्यवादी और बाद की जो भी मिशनरीज हैं उनके साथ यदि जीसस क्राइस्ट का नाम जोड़े, तो उचित नहीं होगा । नि:सन्देह वह महान पुरुष थे । उनके जीवन काल में उनके केवल बारह शिष्य थे। जिसमें एक ने ऐसी गद्दारी की कि तीस रूबल के लिए उनको सरकार के हाथों बेच दिया और दूसरे शिष्य ने मुर्गे की बाग देने से पहले तीन बार कहा “मैं जीसस क्राइस्ट को पहचानता नहीं” जीसस क्राइस्ट श्रेष्ठ पुरुष थे किन्तु उन्हें समकालीन प्रसिद्ध नहीं थी । सूली पर चढ़ने के तीन सो तैंतीस साल बाद रोमन साम्राज्य ने मान्यता दी कि वे श्रेष्ठ पुरुष थे । इनके सिद्वान्त श्रेष्ठ थे । श्रीमती इंदिरा गांधी जी जिन्हें अपना आदर्श मानती थी, वह थी ‘जोन ऑफ आर्क’ । यह जोन आफ आर्क फ्रांस की एक किसान महिला थी । इंगलैंड का मुकाबला करने में फ्रांस के राजा असफल रहे, सरदार असफल रहे, और सेनापति असफल हो गये । इंग्लैण्ड का साम्राज्य फ्रांस पर हो गया । ऐसे समय में एक अद्‌भुत किसान महिला आगे आई और कहा “मुझको भगवान का साक्षात्कार हुआ है । फ्रांस को मुक्त करना हमारा काम है तुम आगे बढ़ो मैं तुम्हारी सहायता करूंगी ।“ आजकल हम प्रगतिशील (प्रोग्रेसिव) हो गये हैं । भगवान और भगवान का साक्षात्कार इस पर हमारा विश्वास नहीं रहता । उन दिनों भगवान या भगवान के साक्षात्कार पर लोगो का विश्वास था । लोगों ने कहा, “यह कह रही है , तो सच होगा” क्यों कि वह अनपढ़ थी । कोई राजनीतिक नहीं थी । इस कारण झूठ बोलने का तो सवाल नहीं था । लोगों ने जोन आफ आर्क की बातों पर विश्वास किया और उसके साथ जुट गये ।

आश्चर्य की बात थी कि उसने एक बड़ी सेना तैयार कर ली । अच्छे-अच्छे अंग्रेज सेनापतियों की तुलना में श्रेष्ठ व्यूह रचना करते हुए उसने विजय प्राप्त की । अग्रेजों को भगा दिया और फ्रांस को स्वतन्त्र किया । निस्सन्देह उसने अभूतपूर्व कार्य किया, जिससे उसकी ख्याति चारों ओर बढ़ने लगी । इस कारण राजनीतिक नेताओं के पेट में दर्द होने लगा । वे सोचने लगे कि जोन आफ आर्क की बड़ी प्रशंसा हो रही है तो हमारी नेतागिरी का क्या होगा? हमारे स्थान का क्या होगा? लेकिन जोन आफ आर्क ने भगवान के साक्षात्कार के भरोसे बहुत बड़ा काम किया था । इसलिए उसे बदनाम करना आसान काम नहीं था । लेकिन राजनीतिक नेताओं ने बड़े अच्छे ढंग से प्रचार किया और कहा कि जोन आफ आर्क ने जो काम किया है वह अति श्रेष्ठ कार्य है, जिसमें कोई शक नहीं । किन्तु एक अनपढ़ किसान महिला ने यह काम करके चमत्कार किया है । किन्तु क्या एक अनपढ़ महिला यह काम कर सकती है? यह सोचने का विषय है कि उसने यह काम कैसे किया होगा? जोन आफ आर्क कह रही है कि उसे भगवान का साक्षात्कार हुआ है । क्या भगवान का साक्षात्कार इतना सस्ता है कि किसी किसान महिला को इतनी आसानी से भगवान का साक्षात्कार हो जाएगा । यह प्रचार गलत है । यदि भगवान का साक्षात्कार हुआ तो धर्मगुरूऔ ने प्रमाण पत्र दिये होते । पोप साहब प्रमाण - पत्र देते । इसमें से किसी ने प्रमाण पत्र नहीं दिया । जोन आफ आर्क ने अद्भूत कार्य करके दिखाया है । इसका अर्थ है कि इस डायन की बड़ी ताकत है । अंग्रेजों के विरूद्ध इस ताकत का उपयोग हुआ अच्छा हुआ । हम सब इसके प्रति कृतज्ञ हैं । यदि हम लोगों ने इस डायन को जिन्दा रखा तो इसकी अभूतपूर्व ताकत का प्रयोग जो अंग्रेजों के खिलाफ हुआ, हम सबके खिलाफ भी हो सकता है । अंग्रेज तो खतरे में थे इसलिए उनको भागना पड़ा । लेकिन हमारी तो दुर्दशा हो जाएगी । इसलिए इसको खत्म कर देना चाहिए । इतना राजनीतिक प्रचार हुआ कि लोगों ने उसे पकड़ लिया और खम्भे में बांध दिया तथा जिन्दा जला दिया । राजनीतिक प्रचार का यह परिणाम हो सकता है । हम लोगों ने १९४८ में यह देखा भी है, किन्तु सत्य छिपा नहीं अन्त में प्रकट हुआ । लगभग चार सौ अस्सी साल बाद वेटिकन सिटी ने घोषणा की कि गलती हो गयी थी, जोन आफ आर्क तो एक महान संत थी । श्रेष्ठता की मान्यता चार सौ अस्सी साल बाद मिली । समकालीन प्रसिद्धि को किसी की श्रेष्ठता की कसौटी या मापदण्ड मानते हैं तो वे सभी लोग बड़े नीच थे ऐसा कहना पड़ेगा । तो उन्हें मान्यता क्यों मिली? प्रसिद्धि क्यों मिली?

और जैसा कि इण्डिया टुडे में लिखा गया कि Where are they now तो उनमें से जिनको समाचार पत्रों में प्रसिद्धि थी उन्हीं को श्रेष्ठ मानना पड़ेगा ऐसी बात नहीं है । श्रेष्ठता यशस्विता का मापदण्ड कुछ और होगा । यदि ऐसा दिखाई देता है तो एक संभ्रम, जो हमारे मन में था कि अन्त में श्रेष्ठ किसको माना जाय वह दूर हुआ । डा० हेडगैवार का उदाहरण लें तो वे प्रसिद्धि पराड्मुख थे । उनका विचार था कि, जो जितना अप्रसिद्ध रहेगा उसके हाथ से उतना ही ठोस काम होगा । एक बार उनके पास दामोदर पंत नाम के कोई सज्जन आए और उन्होंने डाक्टर जी से कहा "मैं एक थीसिस तैयार कर रहा हूँ उसमें श्रेष्ठ पुरुषों के चरित्र लिखना है । आप अपना बायोडाटा (जीवन चरित्र) दे दीजिए ।" डाक्टर साहब ने कहा, "आप मेरे जीवन चरित्र का क्या करेंगे? मैं छोटा आदमी हूं । हां कुछ लिखना है तो राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के बारे में लिखिये, मैं पूरी जानकारी देता हूँ । मेरा जीवन चरित्र आदि कुछ नहीं है ।" आज किसी आदमी से कहा जाय कि आप अपना जीवन परिचय (जीवन चरित्र) दीजिए । हम उसको प्रसिद्ध करना चाहते हैं । कितने लोग इनकार करेंगे जरा सोचिये । ऐसे कई उदाहरण डाक्टर जी के जीवन के हैं । तो डाक्टर जी प्रसिद्धि पराडःमुख थे । इसलिए समकालीन परिस्थितियों का उन्होंने प्रभाव नहीं होने दिया । समकालीन परिस्थितियों का क्या निकष होगा यह विचार हमारे मन में आ ही रहे थे कि मुझे एक सम्भाषण स्मरण हो आया । मैं जब राज्यसभा का सदस्य था उस समय का यह सम्भाषण है। मैं केरल और बंगाल में प्रचारक रहा और कम्युनिष्ट पार्टी के अधिकांश सांसद केरल और बंगाल के थे । हम उनके साथ सेन्ट्रल हाल में बैठते थे । अधिक समय चाय पीना और बातचीत उन्हीं के साथ होती थी । चाय मंगवाया तो उनमें से एक ने हमें चिढ़ाने के लिए कहा, "ठेंगड़ी जी यह जो तुम्हारा आर०एस०एस० है उसका नाम क्या है?" वह सब जानते थे । हमने कहा, "यह नाम है ।" "यह कब स्थापित हुआ?" मैंने कहा, "तब स्थापित हुआ ।" तो बोले "किसने स्थापित किया?" मैंने कहा डाक्टर केशवराम बलीराम हेडगेवार ने ।" यह नाम तो पहले कभी सुना ही नहीं । मैं चुपचाप रहा और समझ गया था कि वह चिढ़ाने के लिए बात कर रहा है । उनमें पालघाट के बालचन्द्र मेनन थे । वे जरा गम्भीर स्वभाव के थे और बोले "Do not talk so lightly" (ऐसे हलकेपन से बात मत करो)। वह बोले कि "मैं हलके पन से बात नहीं कर रहा हूँ ।" बालचन्द्र मेनन ने कहा, "are you really serious" क्या वास्तव में गम्भीर हो? वह बोले कि "मैं गम्भीरता से बात कर रहा हूँ।"

बालचन्द्र ने कहा - आप मेरे दो प्रश्न का उत्तर दो । उन्होंने मुझसे पूछा ठेंगड़ी जी, “आपके डाक्टर हेगडेवार की मृत्यु कब हुई?” मैंने कहा “जून १९४० में” इसका अर्थ है कि डाक्टर हेडगेवार की मृत्यु जवाहर लाल जी के मृत्यु के २४ साल पूर्व हुई । दूसरा प्रश्न उन्होंने पूछा कि, “डाक्टर हेडगेवार की मृत्यु के समय कितने लोग उन्हें जानते थे? कितनी उनकी प्रसिद्धि थी?” हमने कहा “कुछ नहीं”। हमारे Central province के लोग उन्हें जानते थे और उनकी मृत्यु तक संघ का काम थोड़ा सा प्रारम्भ हुआ था । प्रारम्भिक अवस्था में था । वहां के स्वयंसेवकों के मित्र व रिस्तेदार अधिक से अधिक इतने लोग जानते थे । अन्य लोग नहीं जानते थे । पंडित जवाहर लाल जी जब थे तो उनका नाम सारी दुनिया जानती थी कारण कि वह विश्व ख्याति के व्यक्ति थे । अब अगर आह्वान किया जाय कि जवाहर लाल नेहरु के लिए मरने मिटने की आवश्कता है तो कितने लोग सामने आएंगे? वे बोले कि मैं बताता हू । यदि जवाहर लाल के सिद्धान्तों के लिए मर मिटने का ऐसा अह्वान किया तो पचास लोग भी सामने आने वाले नहीं । हाँ उनके सिद्धान्तों के लिए मिनिस्टर होना है तो पचास करोड़ लोग आ जाएंगे । लेकिन डाक्टर हेडगेवार के सिद्धान्तों के लिए मर मिटने का यदि अह्वान हो तो लाखों जवान सामने आ जाएंगे वह मैं और तुम दोनों जानते हैं । अब वे जरा गरम हुए और बाल चन्द्र मेनन से बोले मेनन After all what is the Criteria of greatness आखिर श्रेष्ठता की कसौटी क्या है? तुरन्त बालचन्द्र मेनन ने कहा “The length of one’s shadow on future” अर्थात् भविष्य-काल पर जिसकी छाया जितनी लम्बी पड़ती है यही निकष है । तब ध्यान में आया कि हम डाक्टर जी के बारे में जो सोच रहे हैं कुछ गलत नहीं है । समकालीन प्रसिद्धि मिली हो या न मिली हो । आज के वायु-मण्डल में जहां मेरी प्रसिद्धि, मेरी प्रतिभा निर्माण, मेरी इमेज बिल्डिंग, देश रहे या न रहे । यह जो गलत मूल्य आ गये हैं । गलत सोच विचार आया है इसके कारण किसी के लिए भी संगठन खड़ा करना कठिन हो रहा है । विघटन करना अति आसान कार्य हो गया है । सम्पूर्ण वायु मण्डल विषाक्त हो गया है । यह हम सब जानते हैं राष्ट्र जो खड़ा होता है वह अहंम्वादी लोगों के द्वारा नहीं होता है । अहम्वादी जीवन मूल्य यदि प्रचलित रहे तो राष्ट्र खड़ा नहीं हो सकता है । सम्पूर्ण समाज को बड़ा मानकर जब जीवन मूल्य होते हैं तब समाज खड़ा होता है । मेरा बड़प्पन, जब इसका विचार लेकर लोग चलते हैं तो संगठन टूट जाता है । हम सब लोग जानते है कि आज हम कहां खड़े हैं । विदेशी साम्राज्य यहां आ रहा है

। विदेशी पूंजी के कारण यहां विदेशी साम्राज्य निर्माण हो रहा है । हमारी स्वतन्त्रता समाप्त होकर आर्थिक गुलामी आ जाएगी । हम गुलाम हो जाएंगे ऐसा दिखाई दे रहा है । जब हम समाचार पत्रों में पढ़ते हैं कि मुख्यमंत्री कौन होगा? किसकी टांग कौन खींच रहा है यह सब देश के सामने बहुत बड़ी समस्या है । विदेशी साम्राज्यवाद के चंगुल से भारत को आज कैसे बचाना, यह देश के सामने एक बहुत बड़ी समस्या है किन्तु हमारे नेता एवं पत्रकार इस बात की चर्चा में व्यस्त हैं कि नेता कौन होगा? या मिनिस्टर कौन होगा? प्रधानमन्त्री कौन होगा? मैंने गीताप्रेस के कल्याण में एक चित्र देखा था । चित्र में मेढ़क दिखाया गया था । उसके सामने कुछ कीट-पतंगे दिखाये गये थे । जिसे देख कर मेंढक की जीभ लम्बी हो रही थी और उसमें से लार टपक रही थी । जिसका अर्थ होता है कि मेढक सोच रहा है कि उसके सामने के कीड़े-मकोड़े और मच्छर अब उसे खाने को मिलेंगे । किन्तु यह बात वह नहीं जानता था कि वह महासर्प के जबड़े में बैठा था । जब चाहे तब वह सर्प अपने जबड़े को बन्द कर लेगा और मेढक को अपने पेट में कर लेगा । किन्तु इस बात की चिन्ता उसे नहीं थी । उसी प्रकार विदेशी साम्राज्यवाद के जबड़े में हम सब लोग बैठे हैं । देश पर बहुत बड़ा संकट है । जो राजनौतिक स्वतन्त्रता हमें इतने वर्षो के बाद प्राप्त हुई है अब उसकी समाप्ति होने की बारी है । हमारे नेता व पत्रकार आपस में चर्चा कर रहे है कि कौन मुख्यमन्त्री या प्रधानमन्त्री होगा? किन्तु वे यह नहीं जानते कि जब विदेशी साम्राज्यवादियों का जबड़ा बन्द हो जाएगा तब कोई नहीं रहेगा । न रहेगा बांस न बजेगी बांसुरी । ऐसी दशा देश की है ।

आज जीवन मूल्य बदल गये हैं । ऐसे समय में संगठन खड़ा करना बहुत कठिन काम है । यह कठिन काम हमें करना है । किन्तु यह काम तभी हो सकता है जब हम स्वयं अपने को इस काम के उपयुक्त बनायेगे इस कठिन काम के लिए सक्षम बनायेंगे । सक्षम कैसे बना सकते हैं, तो यह हम सब जानते है कि दुनिया में संगठन के नाते यदि किसी को सबसे अच्छा माना गया है तो वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है, जिसे एक आदर्श के रुप में माना गया है । विदेशियों ने भी माना है । हमारे देश के लोगो ने भी माना है । यहां तक कि गाली देने वाले भी संघ को आदर्श संगठन के नाते गाली देते हुए कहते है कि संघ को खत्म करना है किन्तु इसी के रास्ते अपनाकर इसको खत्म करना है । गाली देते होंगे किन्तु मजबूत संगठन खड़ा करना संघ जानता है । यह बात सब जानते है । हमें यह

बात समझ लेना चाहिये कि इतना मजबूत संगठन कैसे खड़ा हुआ है । राष्ट्रीय स्वंयसेवक संघ के मर्म को समझने की आवश्यकता है । इसे समझ लें तो अपना संगठन खड़ा करने में सफलता होगी । संघ इतना मजबूत संगठन कैसे हुआ इसका थोड़ा बहुत संकेत हम लोगों को मिल सकता है । जन्म शताब्दि के इस वर्ष में पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं का शिविर लगना यह एक संयोग की बात है । कार्यक्रम के प्रारम्भ में महाभारत देखना जिसमें कर्म, अकर्म, धर्माधर्म, कर्त्तव्य, अकर्त्तव्य की चर्चा आने वाली है । यह भी एक संयोग हैं । इसी वर्ष अभी कुछ दिन पूर्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं का शिविर नागपुर में सम्पन्न हुआ । आज के सभी प्रचारकों को संघ में पूर्ण कालीन कार्यकर्ता कहते हैं जो बड़ी महत्वपूर्ण संख्या में वहां आये थे ।

बहुत दिन पहले किसी ने पण्डित दीनदयाल जी से पूछा “संघ के प्रचारक जनसंघ में काम कर रहे हैं किन्तु संघ में प्रचारक एवं जनसंघ में उन्हें संगठन मन्त्री कहा जाता है तो ऐसा भेद क्यों?” “इसका कारण यह है कि संघ में सभी का ध्यान संगठन पर केन्द्रित रहता है । इसलिए पूरी शक्ति के साथ वे संगठन करते हैं । किन्तु थोड़ा सा प्रचार भी आवश्यक है । इसका भी बोध इन्हें रहे इसलिए इन्हें प्रचारक कहते हैं । प्रजातंत्रीय राजनीतिक पार्टी में सम्पूर्ण ध्यान प्रचार पर रहता है । संगठन की ओर ध्यान कम । केवल प्रचार ही नहीं थोड़ा संगठन पर ध्यान रहे इसका बोध कराने के लिए इन्हें संगठन मन्त्री कहते हैं ।“ जैसे हम पूर्ण कालिक कार्यकर्ता हैं । वहाँ प्रचारक कहा जाता है । प्रचारक जो आज प्रत्यक्ष काम में हैं और ऐसे प्रचारक जिनका स्वास्थ्य आदि खराब होने के कारण घरेलु परिस्थितियों के कारण, अब निवृत्त हो गये हैं , ऐसे वर्तमान और भूतपूर्व प्रचारक लगभग ६ हजार की संख्या में नागपुर वर्ग में एकत्रित आए थे । उसी समय हमारा भी पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं का यह वर्ग लग रहा है । यह भी एक शुभ संयोग है ऐसा मुझे लगता है । संघ कार्य की यदि कुछ रीढ़ होगी तो वह प्रचारक है । यह संघ कार्य यदि खड़ा है तो प्रचारक के भरोसे खड़ा है । यह बात हम सब जानते हैं । अन्यान्य पदाधिकारी हैं । शिक्षक, मुख्य शिक्षक, कार्यवाह, संघ चालक, प्रान्त संघ चालक आदि हैं । अखिल भारतीय अधिकारी हैं । लेकिन जो कार्य चल रहा है वह प्रचारक के भरोसे चल रहा है यह हम सब जानते हैं । प्रचारक उसके ऊपर आधारित संगठन की शक्ति है । जैसे वहां प्रचारक संस्था है । ठीक है वहां की परिस्थिति भिन्न है, इसके कारण वहां की सम्पूर्ण रीति-नीति का हम यहां पूरी तरह से अवलम्बन नहीं कर

सकते । कुछ मर्यादाएं आ जाती हैं कार्य के स्वरूप के कारण, किन्तु, जो स्थान प्रचारक का संघ में है, पूर्णकालिक कार्यर्ताओं का वही स्थान भारतीय मजदूर संघ में है । इस नाते समझने में कोई कठिनाई नहीं होनी चाहिये । जैसा कि मैंने कहा कि क्षैत्र के काम के स्वरूप में थोड़ा अन्तर हो सकता है । आपका महत्व भारतीय मजदूर संघ के नाते वही है जो प्रचारक संस्था का महत्व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ में है । इस दृष्टि से प्रचारक का थोड़ा सा निरीक्षण करना उपयुक्त रहेगा । प्रचारक संस्था धीरे-धीरे विकसित हुई है । जब मैं प्रचारक निकला तो हमें सब कुछ आता था - ऐसा नहीं था । ऐसे शौक के लिए सोचा था दूसरे प्रदेश में जाएंगे, शाखा प्रारम्भ करेंगे, देखेंगे, दो चार साल काम करेंगे फिर घर चले आयेंगे । जैसे शेष लोग व्यवहार करते हैं वैसा करेंगे । शौक के नाते हम वहां चले गये थे । केरल में शाखाएं प्रारम्भ किया । पूरी संघ की रीति नीति हमें पता नहीं थी । बहुत नया स्वयंसेवक था । नागपुर में देखा था कि शाखा पर देरी से आने या किसी अन्य कारण से अधिकारी को प्रणाम करते हैं संघ चालक रहा तो संघ चालक को, संघ चालक नहीं रहा तो कार्यवाह को और यदि कार्यवाह नहीं रहा तो मुख्य शिक्षक को प्रणाम करते हैं । अधिकारी को प्रणाम करते हैं । हमने केरल में पहली शाखा खड़ी की तो कुछ दिन बाद दूसरी शाखा खड़ी हो गई हम विशुद्ध स्वयंसेवक तो नहीं थे । थोड़ा शौक के लिए गये थे । हमारे मन में आया कि हमें काम खड़ा करना है, शाखा चला रहे हैं । कोई देरी से आता है तो प्रणाम का अधिकारी मैं हूं । आखिर मैंने सारा काम खड़ा किया है । बड़ा अहंकार हमारे मन में था । संघ शिक्षा वर्ग के लिए जब मैं नागपुर गया तो पूछा कि “काम तो हमने खड़ा किया है । प्रणाम आदि ले सकते हैं कि नहीं?” उन्होंने कहा- “नहीं” “जो प्रचारक है वह प्रणाम का अधिकारी नहीं है।“ हमने कहा “यह तो मुसीबत है।“ सारा काम हम खड़ा करें, घरबार छोड़कर यहाँ आए और प्रणाम उसको देना जो शादी सुदा है । बाल बच्चों वाला है । मेरे अहंकार को बड़ा धक्का लगा । अरे उसे प्रणाम करूं जो संघ के बारे में जानता नहीं था । मैंने उसे संघ समझाया । मैंने उसे संघ में लाया । ठीक है कुछ व्यवस्था है । मैंने उसको बनाया और मैं उसे प्रणाम करूं । लेकिन संघ में अनुशासन है । अपने मन को मार कर प्रणाम करना शुरू किया । यद्यपि मन को अच्छा नहीं लगता था । है क्या? यह सोचते रहते काम चला । उसके बाद हमें बंगाल भेजा गया । गांधी जी की हत्या हुई । संघ पर प्रतिबंध लगा । उस समय संघ का जो अलिखित संविधान था उसे शब्द बद्ध करने की आवश्यकता हुई ।

मा० एक नाथ जी उस समय काम देखते थे । जो कुछ बाहर थे, उनको बुलाया गया । बैठक हुई । बैठक में बैठता तो था किन्तु हमें समझ में नहीं आता था इसलिए रुचि नहीं थी । उस समय सोच भी नहीं थी । जब चर्चा चलती थी तो हम दूसरी बात सोचते थे । संघ का विधान बन गया । बाद में आया कि यहाँ चुनाव होंगे । और प्रत्येक स्वयंसेवक वोटर है । मातदाताओं की सूची संघ में है । उसके द्वारा प्रतिनिधियों का निर्वाचन । संघ चालक का निर्वाचन, यह जो निर्वाचित प्रतिनिधि हैं वह प्रान्त संघ चालक का निर्वाचन करेंगे । इसी प्रक्रिया में सरकार्यवाह का निर्वाचन । आप जानते हैं कि संविधान में सर्वोच्च पदाधिकारी सरकार्यवाह है । सरसंघचालक नहीं । यह भी एक अजीब बात है । बाहर के लोग तो इसे समझ नहीं सकते । सरसंघचालक पदाधिकारी ही नहीं है । वह तो Guide and philosopher है। केवल मार्गदर्शक एवं तत्वज्ञ है । उनको पदाधिकार नहीं ,(Chief executive officer) सरकार्यवाह और उसके पदाधिकार का निर्वाचन स्वयं सेवकों द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि करेंगे । संघ का संविधान ईमानदारी से हमने पढ़ा नहीं । भारतीय मजदूर संघ के संविधान का निर्माण कार्य दादा मुखर्जी और दादा काम्बले को दिया गया था । संविधान बना किन्तु हमने पढ़ा ही नहीं । मैं प्रचारक के नाते कहाँ मतदान करता? यह जानना चाहा कारण कि मैं मतदाता था । चिन्ता होना स्वाभाविक थी । लेकिन यह जानकर बड़ा आश्चर्य हुआ कि मतदाता सूची में मेरा नाम ही नहीं था । स्पष्ट था कि वोट के समय हमें मत देने का अधिकार नहीं था । हमें बताया गया कि प्रचारक न तो मतदाता है और नहीं उसे मत देने का अधिकार है । एकाध प्रचारक यदि उपयुक्त हैं तो उसे नियुक्त किया जाता है । जब केरल में था तो मेरे अहंकार को बहुत धक्का लगा था किन्तु इस बीच कुछ गुरुजनों के सहवास से कुछ संस्कार भी हुए थे । तो हमें अनुभव हुआ कि बहुत सोच समझकर योजना बनाई गई होगी । सम्पूर्ण संघ के ढाचे में प्रचारक संस्था शरीर में अस्थि संग्रह जैसा है । मा० बाबा साहब आप्टे कहते थे कि प्रचारक पदाधिकारी नहीं है । वे उदाहरण देते थे कि यह शरीर चल रहा है । शरीर सुन्दर है या कुरूप है कौन सा अवयव देख कर आप तय करेंगे-चेहरा कैसा है? नाक कैसी है? औखें कैसी हैं? वर्ण क्या है, इस पर तय करेंगे क्या? तो उसका शरीर कुल मिलाकर हाथ है, पैर है, कैसा मजबूत दिखता है या दुबला, यह सब देखकर तय करेंगे क्या ऊपर से दिखने वाले अवयव सम्पूर्ण शरीर को चलाते हैं । ठीक है चेहरा सुन्दर है तो हम कहेंगे कि भाई वह व्यक्ति सुन्दर है । मान लीजिये कुछ चेचक हो गई है, जिसके

कारण चेहरे पर व्रण आ गये हैं तो क्या शरीर उसका नष्ट ही गया ऐसा कहा जाएगा? सुन्दरता और शरीर दोनों नष्ट हो गये क्या? हाथ कट जाये, पैर कट जाये, चेहरा विकृत हो जाये, शरीर फिर भी चलता रहता है । ऐसा कौन सा मर्म स्थान है जो शरीर को चलाता है तो हमने कहा “हृदय” । आप किसी की मृत्यु में देखिये तो कहते हैं Heart failure हो गया । हृदय गति बन्द हुए बिना कोई मृत्यु होती ही नहीं । हृदय सम्पूर्ण शरीर को चलाता है । लेकिन यह जो हृदय है बाहर से दिखता है क्या? हाथ पैर बाहर से दिखाई पड़ते हैं । सुन्दर आंख और नाक बाहर से दिखाई पड़ती हैं ।

परन्तु सम्पूर्ण शरीर को चलाने वाला हृदय किसी को भी दिखाई नहीं देता है । दिखाई न पड़ते हुए भी यह शरीर को चला रहा है । उन्होंने कहा कि कार्यकर्ता हृदय के समान हैं जो सम्पूर्ण संगठन को चलाते रहते हैं किन्तु बाहर से दिखाई नहीं पड़ते हैं । कान-आंख व नाक के समान हृदय बाहर से दृश्यमान नहीं है । उसी प्रकार यह कार्यकर्ता भी बाहर से दृश्यमान नहीं रहता है । बाबा साहब की छलाँग बहुत दूर तक थी । उन्होंने कहा कि सम्पूर्ण दुनिया चल रही है किन्तु चलते कोई देख नहीं रहा है । आखिर इस दुनिया का चलाने वाला कोई है कि नहीं । हम एक संस्था चलाते हैं तो कहते हैं कि हमारा नाम प्रत्येक दिन समाचार पत्रों में आना चाहिये । पर जो सारी दुनिया को चला रहा है वह तो आंखों से दिखता भी नहीं है । जो आंखों से दिखता नही है वह सारी दुनियाँ को चला सकता है । किन्तु जिनके नाम हम नित्य समाचार पत्रों में पढ़ते है वे तो ठीक स एक संस्था भी नहीं चला सकते हैं ।

संगठन मजबूत जिन कार्यकर्ताओं के आधार पर होता है ऐसे कार्यकर्ता की मन: स्थिति कैसी होनी चाहिए इसका बोध हमें हो सकता है । आज यह सबको पता है कि विश्व में सबसे मजबूत संगठन के नाते राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ है, जिसका आधार प्रचारक संस्था है । प्रचारक की जो स्थिति संघ में है वही स्थिति पूर्ण कालिक कार्यकर्ताओं की भारतीय मजदूर संघ में है । पाठ सीखने की दृष्टि से यह एक उदाहरण दिया गया है । यहाँ जो पूर्ण कालिक कार्यकर्ता आए हैं उन्हें सभी बातों पर विचार करना है । कार्यकर्ता के नाते हमारा आत्म विकास कैसे होगा यह देखना हैं । संगठन का कार्य जो हमने अपने हाथों में लिया है यदि इसे सफलता पूर्वक सम्पन्न करना है तो कार्यकर्ताओं को स्वयं को सक्षम

और उपयुक्त बनाने के लिए संघ के प्रचारक संस्था को एक आदर्श के रूप में ध्यान में रखकर आत्म निरीक्षण करना चाहिए ।

॥भारत माता की जय ॥

यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत ।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम् ॥

परित्राणाय साधूनाम् विनाशाय च दुष्कृताम्।
धर्मसंस्थापनार्थाय संभवामि युगे युगे ॥